हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार 14 जून 2026

11 डीसी ने नीट परीक्षा को लेकर तैयारियों की समीक्षा की

12 विधायक ने डीसी व एसडीएम के साथ रोपे पौधे

खबर संक्षेप

ऑनलाइन योग प्रशिक्षण शिविर आज

झज्जर। जिले भर में 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां जोरों से चल रही हैं। आमजन को योगाभ्यास कार्यक्रमों से जोड़ने तथा योग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। जिला योग समन्वयक डॉ. पवन देशवाल ने बताया कि रविवार सुबह 6:15 बजे से ऑनलाइन योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में देशभर के नागरिक भाग लेकर योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं। उन्होंने बताया कि ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर से जुड़ने के लिए प्रतिभागियों को टोल फ्री नंबर 18003157008 पर मिस्ड कॉल देनी होगी। मिस्ड कॉल देने के उपरांत प्रतिभागियों के मोबाइल फोन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का लिंक प्राप्त हो जाएगा, जिसके माध्यम से वे आसानी से शिविर में शामिल हो सकेंगे।

विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आज

बहादुरगढ़। विश्व रक्तदाता दिवस के उपलक्ष्य में रविवार को ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाया जाएगा। अस्पताल के मैनेजर विक्की शर्मा ने बताया कि सुबह 9 बजे से शाम 3 बजे तक आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंजीत नाथ महाराज समपाला धाम तथा रामानंद जी महाराज दरियापुर मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता अस्पताल के डायरेक्टर डॉ. मनीष शर्मा करेंगे।

गो तस्करी के दोनों आरोपी रिमांड पर लिए

बहादुरगढ़। थाना सेक्टर-6 पुलिस ने गो तस्करी के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बृजवासी गो रक्षा सेवा के सदस्य हरि की शिकायत पर गोवंश संरक्षण एवं गोवंश संवर्धन एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया था। इस मामले की गहनता से छानबीन के दौरान सचिन निवासी सराय औरंगाबाद और सौरव निवासी खरकड़ी नाहर नजफगढ़ को गिरफ्तार किया है। दोनों को अदालत में पेश किया गया। दोनों आरोपियों को एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया।

जेई ने लिया दूषित जलापूर्ति का जायजा

बहादुरगढ़। शहर के शास्त्री नगर कॉलोनी में पिछले कई दिनों से सीवर युक्त पानी की सप्लाई हो रही है। जलापूर्ति अभियांत्रिकी विभाग के जेई अतुल त्यागी ने पूर्व पार्षद जसबीर सैनी के साथ शास्त्री नगर में पेयजल सप्लाई चेक की। उन्होंने आश्वासन दिया कि जलापूर्ति को जल्द दुरुस्त करवाया जाएगा।

राव मंगलीराम पार्क की बदली तस्वीर, लेकिन कमियां सता रही

गर्मियों में खराब पड़ा वाटर कूलर बारिश में निकासी के इंतजाम नहीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

सौंदर्यीकरण के बाद पार्क में बढ़ी शहरवासियों की संख्या

नगर परिषद द्वारा शहर के सौंदर्यीकरण और विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक असर अब शहर के पार्कों में दिखाई देने लगा है। छारा चुंगी स्थित राव मंगलीराम पार्क इसका एक उदाहरण बनकर उभरा है। आधुनिक झूलों, आकर्षक लाइटिंग, बैठने की समुचित व्यवस्था और शाम के समय चलने वाले फव्वारों ने पार्क की तस्वीर पूरी तरह बदल दी है। कुछ समय पहले तक टूटे झूलों व पगडंडियों और सुविधाओं के अभाव में इस पार्क में बच्चों की संख्या कम रहती थी, लेकिन अब यह बच्चों की पसंदीदा जगह बन गया है। हालांकि गर्मी व मानसून को देखते हुए पार्क कुछ कमियां सामने आ रही हैं, जो आने वाले दिनों में परेशानी खड़ी कर सकती हैं। पार्क में लगा वाटर कूलर खराब पड़ा है। लोगों ने चौकीदार की नियुक्ति और बरसाती पानी की निकासी व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग की है। उनका कहना है कि ड्रेनेज पाइप अवरुद्ध होने और मेनहोल के ढक्कन उखड़ने से भविष्य में परेशानी खड़ी हो सकती है। उन्होंने कहा कि मानसून का सीजन सिर पर है। तेज बारिश में पूरा पार्क पानी से भर जाएगा।

सिटी पल्स

झज्जर। पार्क में फव्वारे के साथ फोटो खिंचवाते बच्चे और टहलते हुए शहरवासी।

रोशनी से नहाए फव्वारे आकर्षण का केंद्र

रंग-बिरंगे और आधुनिक झूलों पर बच्चे देर तक खेलते नजर आते हैं, जबकि सुबह-शाम सैर करने वाले बुजुर्ग और महिलाएं भी पार्क के नए स्वरूप से काफी संतुष्ट हैं। शाम सात से आठ बजे तक रंगीन रोशनी के बीच चलने वाले फव्वारे पार्क की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। बच्चे और अभिभावक फव्वारों के साथ सेल्फी भी लेते दिखाई देते हैं। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिसकर्मी या होमगार्ड की तैनाती भी लोगों में भरोसा बढ़ा रही है। पहले जहां शाम ढलते ही पार्क सुनसान हो जाता था, वहीं अब यहां परिवारों और बच्चों की चहल-पहल देखने को मिलती है।

झूलों व फव्वारों से बढ़ी रौनक

नियमित सैर को आने वाले बुजुर्ग राजे ने बताया कि पार्क में हुए बदलाव से माहौल पूरी तरह बदल गया है। पहले लोग यहां आने से कतराते थे, लेकिन अब बच्चों और परिवारों की भीड़ रहती है। फव्वारे और लाइटिंग इसकी सबसे बड़ी विशेषता हैं।

बैठने के लिए बनाए शेड

नियमित सैर करने वाले बुजुर्ग ओमप्रकाश ने बताया कि नगर परिषद ने पार्क को सुंदर बनाने का अच्छा काम किया है। बैठने की बेहतरीन व्यवस्था और साफ-सफाई से बुजुर्गों को काफी सुविधा मिली है। बैठने के लिए बनाई गई शेड धूप व बारिश से भी बचाती है।

ड्रेनेज सिस्टम ठीक करवाएं

छोटे लाल ने बताया कि बेशक पार्क की रौनक बढ़ी है, लेकिन कुछ समस्याओं पर अभी भी ध्यान देने की जरूरत है। वाटर कूलर खराब है और ड्रेनेज सिस्टम की सफाई नहीं होने से बरसात में दिक्कत आ सकती है।

यहां बूंदों से परेशानी

झज्जर। बारिश के कारण सब्जी मंडी में फैले कीचड़ को साफ करते हुए युवक।

12.6 एमएम बारिश से तापमान में आई गिरावट

अनुमान : आज फिर छाए रह सकते हैं बादल

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शुक्रवार रात को हुई बरसात ने बहादुरगढ़वासियों को झुलसाती हुई गर्मी से कुछ राहत दी। देर रात हुई बरसात 12.6 मिलीमीटर रिकॉर्ड हुई। शनिवार को इसके कारण बादल छाए रहे। दिन का अधिकतम तापमान लगभग 34 डिग्री दर्ज हुआ। रात का न्यूनतम तापमान करीब 24 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। रात हुई बारिश और तेज हवाओं ने तापमान को काफी हद तक कम कर दिया। मौसम विभाग के अनुसार रविवार 14 जून को अधिकतम तापमान 38 डिग्री और न्यूनतम 24 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना जताई है। इससे गर्मी से राहत मिलने की संभावना है।

दिन भर बदलता रहा मौसम का मिजाज सबसे ज्यादा साल्हावास में हुई बारिश

शुक्रवार देर रात हुई हल्की बारिश से आमजन को गर्मी से आंशिक राहत मिली है। बारिश के साथ चली ठंडी हवाओं के कारण मौसम खुशनुमा हो गया और तापमान में गिरावट दर्ज की गई। वहीं शनिवार को भी दिनभर मौसम का मिजाज बदलता रहा। कभी आसमान में काले बादल और कभी हल्की धूप निकलती रही। विशेषज्ञ आगामी दिनों में भी मौसम परिवर्तनशील रहने का अनुमान लगा रहे हैं। शनिवार को अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। विभागीय आंकड़ों के अनुसार झज्जर में 6.8 एमएम, बादली में दो एमएम, बेरी में 11 एमएम, मातनहेल में 6.3 एमएम और साल्हावास में 16.5 एमएम बारिश दर्ज की गई। उधर, किसान बारिश को फायदेमंद बता रहे हैं। किसानों का कहना है कि अगर तेज बारिश होती है तो धान की बिजाई में लाभ होगा।

कहां कितनी बारिश

स्थान	बारिश (एमएम)
झज्जर	6.8
बादली	2.0
बेरी	11
मातनहेल	6.3
साल्हावास	16.5

कपड़े सुखाते समय करंट लगने से किशोरी की मौत

बहादुरगढ़। गांव कसार के निकट स्थित एक कबाड़ के स्टॉक पर काम करने वाले असम निवासी परिवार की 16 वर्षीय बेटी की करंट लगने से दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद परिवार में कोहराम मच गया।

जानकारी के अनुसार, असम निवासी परिवार कबाड़ के स्टॉक पर कार्य करता है और वहीं रह रहा था। उनकी 16 वर्षीय पुत्री हाफिज खातून कपड़े सुखा रही थी। इसी दौरान वहां लगी लोहे की कंटीली तार में अचानक करंट प्रवाहित हो गया। कपड़े सुखाते समय किशोरी तार की चपेट में आ गई और उसे जोरदार बिजली का झटका लगा। परिजन और आसपास मौजूद लोग तुरंत उसे बचाने के लिए मौके पर पहुंचे तथा उपचार के लिए अस्पताल ले गए, लेकिन चिकित्सकों ने किशोरी को मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और इस मामले में आवश्यक कार्रवाई शुरू की। इस दर्दनाक हादसे से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है।

बेरी के मेन बाजार में दुकान में लगी आग

- आसपास के दुकानदारों ने समय रहते पाया आग पर काबू, बड़ा हादसा टला

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

कस्बा बेरी स्थित मेन बाजार में अज्ञात कारणों के चलते एक स्टेशनरी की दुकान में आग लग गई। आग लगने से आसपास के दुकानदारों में अफरा-तफरी मच गई और हर कोई आग पर काबू पाने के लिए दौड़ा। इस दौरान पड़ोसी दुकानदारों ने इसकी सूचना फायर ब्रिगेड को दी और स्वयं आग पर काबू पाने का प्रयास करने लगे। जब तक फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंची तब तक दुकानदारों द्वारा आग पर काबू पा लिया था। पीड़ित दुकानदार विक्की के अनुसार जब तक दुकानदारों द्वारा आग पर काबू पाया गया तब तक इस आगजनी में दुकान में रखा करीब दो लाख रुपये का सामान झुलस चुका था। विक्की ने बताया कि मेन बाजार में किताबों की दुकान कर रखी है और उसके साथ वाली दुकान में गोदाम बनाया हुआ है जिसमें किताबें और कॉस्मेटिक का सामान रखा था। शनिवार दोपहर बाद करीब एक बजकर दस मिनट पर दुकान से धुआं निकलता दिखाई और जब दुकान का शटर उठाया तो अंदर आग लगी हुई थी। इसके बाद दुकानदारों ने सूझबूझ का परिचय देते हुए अग्निशामक यंत्र व पानी की सहायता समय रहते काबू पा लिया अन्यथा आग साथ लगती दुकानों में भी फैल सकती थी।

झज्जर। आग लगने के उपरांत दुकान से निकलता धुआं।

शक्ति नगर में 98 लाख से बनेंगी गलियां बुजुर्गों ने किया निर्माण कार्य का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शक्ति नगर में 98 लाख की लागत से नई गलियों के निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ। राज सिंह अखाड़े के पास बनने वाली इन गलियों का शुभारंभ वार्ड के बुजुर्गों द्वारा नारियल फोड़कर किया गया। स्थानीय लोगों ने पार्षद बलराम दलाल उर्फ मिंटू पहलवान और नगर परिषद का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पंडित राज सिंह पहलवान, जय सिंह दलाल, बलबीर मलिक, कृष्णा राठी, रणधीर सरोहा, श्रीकृष्ण, रमेश राठी, राजू, वीरेंद्र, राजवीर, जगबीर कोच, नरेश पंडित, साहब सिंह दलाल, मास्टर रामनिवास, मनोज, रमेश दलाल, चतर सिंह, रामचंद्र, धर्मवीर, महावीर, कपिल शर्मा, मास्टर मनोज, रामफल पांचाल, सूबेदार, चंद्रभान, दयानंद राठी, जयपाल, प्रवीण और सुरेंद्र मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। गली निर्माण का शुभारंभ करते शक्ति नगर निवासी।

दो युवकों से अवैध हथियार व 7 कारतूस बरामद

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

पुलिस टीम ने दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से अवैध हथियार और सात जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। सीआईए वन बहादुरगढ़ प्रभारी अमित कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर रविंद्र निवासी फतेहपुरी झज्जर को काबू किया गया। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने एक अवैध हथियार, एक मैगजीन तथा 3 जिंदा कारतूस बरामद किए। इसके अलावा 22 अप्रैल को अवैध हथियार के साथ पकड़े गए नाबालिग से मिली जानकारी के आधार पर साहिल निवासी भापड़ौदा को गिरफ्तार किया गया। अदालत से मिले एक दिन के पुलिस रिमांड के दौरान उसकी निशानदेही पर एक अवैध हथियार और 4 जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं।

दादा, ताऊ और पिता के बाद अब तीसरी पीढ़ी दे रही सेना में सेवा

सिपाही से लेफ्टिनेंट बने सोलधा के राकेश काजला

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

गांव सोलधा के राकेश काजला ने अपनी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और अथक प्रयासों के दम पर भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनने का गौरव हासिल किया है। राकेश के दादा रणधीर सिंह तथा पिता अरुण काजला भी भारतीय सेना में सेवाएं दे चुके हैं। उनके ताऊ रामनिवास काजला भी सेना में सूबेदार के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

दरअसल, शनिवार को उत्तराखंड के देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी में आयोजित 158वें रेगुलर कोर्स और 141वें टेक्निकल ग्रेजुएट कोर्स की पासिंग आउट परेड के दौरान राकेश को भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया। इस गौरवपूर्ण अवसर पर उनके पिता अरुण काजला, मां रजनी, बहन रितू, जीजा हिमांशु बधवार, पत्नी माही और बेटी यश्वी भी मौजूद रहे। बता दें कि राकेश ने गांव सोलधा के राजकीय विद्यालय से वर्ष 2008 में दसवीं तथा 2010 में बारहवीं की शिक्षा पूरी की। इसके बाद उन्होंने सेना में भर्ती होने की तैयारी शुरू की और राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ से बीकॉम ऑनर्स की पढ़ाई के दौरान दिसंबर 2013 में भारतीय सेना की जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फेंट्री में सैनिक के रूप में चयनित हुए। इसके बाद अपनी लगन के बल पर उन्होंने सेना में लांस नायक, नायक और फिर हवलदार तक का सफर तय किया। इस दौरान उन्होंने वर्ष 2019 में स्नातक की परीक्षा भी उत्तीर्ण की तथा एससीओ-58 और टेक्निकल ग्रेजुएट कोर्स जैसी महत्वपूर्ण परीक्षाएं भी पास कीं। उन्होंने 11 मार्च 2025 को सर्विस सिलेक्शन बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण कर आईएमए में प्रवेश प्राप्त किया।

बहादुरगढ़। लेफ्टिनेंट के रूप में कमीशन प्राप्त करने के बाद राकेश काजला।

लक्ष्य स्पष्ट हो व मेहनत ईमानदारी से करें

गांव की सरपंच लक्ष्मी प्रदीप काजला ने कहा कि राकेश की यह उपलब्धि पूरे गांव और क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है। वहीं ग्रामीणों का मानना है कि उनकी सफलता अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा बनेगी और अधिक से अधिक युवा देश सेवा के लिए सेना में जाने का संकल्प लेंगे। बेटे की इस उपलब्धि पर पिता अरुण काजला ने खुशी जताते हुए कहा कि यह पूरे परिवार के लिए गर्व का क्षण है। राकेश काजला ने युवाओं को संदेश देते हुए कहा कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत ईमानदारी से की जाए तो सफलता अवश्य मिलती है।

महंगाई व टैक्स के दौर में

एफडी क्या सचमुच बढ़ा रही है बचत

तैयारी
बिजनेस डेस्क

खास बातें

1. 5 प्रतिशत महंगाई के बीच एफडी कैसे बन रहा है सीमित कमाई का साधन
2. विशेषज्ञों ने दी निवेश की रणनीति बदलने की सलाह
3. सुरक्षित निवेश तो है, लेकिन लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण के लिए अकेली एफडी काफी नहीं

फिक्स्ड डिपॉजिट आज भी पूंजी की सुरक्षा और स्थिर आय के लिए एक मजबूत विकल्प है, लेकिन केवल एफडी के भरोसे लंबी अवधि में बड़ी संपत्ति बनाना आसान नहीं है। महंगाई और टैक्स मिलकर इसके वास्तविक रिटर्न को काफी कम कर सकते हैं। इसलिए निवेशकों को अपनी जरूरत, लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार एफडी के साथ अन्य निवेश विकल्पों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। आखिरकार निवेश की असली सफलता बैंक बैलेंस बढ़ने में नहीं, बल्कि समय के साथ आपकी क्रय शक्ति बढ़ने में छिपी होती है।

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) को लंबे समय से सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का प्रतीक माना जाता रहा है। निश्चित ब्याज, पूंजी की सुरक्षा और आसान प्रक्रिया के कारण लाखों निवेशक अपनी बचत एफडी में लगाते हैं। लेकिन बदलते आर्थिक माहौल में केवल ब्याज दर को देखकर निवेश का आकलन करना पर्याप्त नहीं रह गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी निवेश की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि वह महंगाई और करों का असर झेलने के बाद निवेशक की क्रय शक्ति को कितना बढ़ा पाता है। यदि एफडी पर मिलने वाला रिटर्न महंगाई दर के बराबर या उससे कम है, तो खाते में रकम बढ़ने के बावजूद वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है। खासकर उच्च आयकर स्लैब वाले निवेशकों के लिए टैक्स कटने के बाद एफडी का रिटर्न और कम हो जाता है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या एफडी केवल धन सुरक्षित रखने का साधन है या फिर वास्तव में संपत्ति निर्माण का भी प्रभावी माध्यम है।

पूंजी सुरक्षा के लिए बेहतर, लेकिन वेल्थ क्रिएशन के लिए जरूरी है विविध निवेश रणनीति

महंगाई क्यों कम कर देती है

- मान लीजिए किसी निवेशक को एफडी पर 6 प्रतिशत ब्याज मिलता है और उसी अवधि में महंगाई दर 5 प्रतिशत रहती है। ऐसे में निवेशक का वास्तविक लाभ केवल 1 प्रतिशत के आसपास रह जाता है।
- वित्तीय सलाहकार इसी कारण ₹रियल रिटर्न₹ पर जोर देते हैं। रियल रिटर्न का अर्थ है निवेश से मिलने वाला वास्तविक लाभ, जो महंगाई घटाने के बाद बचता है।
- रियल रिटर्न = निवेश पर रिटर्न – महंगाई दर
- यदि एफडी का ब्याज 4.9 प्रतिशत और महंगाई 5 प्रतिशत है, तो निवेशक की क्रय शक्ति बढ़ने के बजाय घट भी सकती है।

एसबीआई की एफडी दरें क्या बताती हैं?

- 5 प्रतिशत महंगाई को आधार मानें तो छह महीने तक की छोटी अवधि वाली कई एफडी योजनाएं महंगाई को मात देने में संघर्ष करती दिखाई देती हैं। इन पर मिलने वाला ब्याज 3.05 प्रतिशत से 4.9 प्रतिशत के बीच है।
- हालांकि 1 से 3 वर्ष की अवधि वाली एफडी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस अवधि में एसबीआई करीब 6.25 से 6.4 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है, जिससे वास्तविक रिटर्न लगभग 1.25 से 1.4 प्रतिशत तक पहुंचता है। दिलचस्प बात यह है कि 5 से 10 वर्ष तक की लंबी अवधि की एफडी में भी महंगाई के बाद वास्तविक लाभ बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यानी केवल लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से बड़ा लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।

टैक्स के बाद और घट जाता है रिटर्न

महंगाई के अलावा टैक्स भी एफडी निवेशकों की कमाई को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 6.4 प्रतिशत ब्याज वाली एफडी पर।

- शून्य टैक्स स्लैब में रिटर्नः 6.4%
- 20% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 5.12%
- 30% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 4.48%
- यानी 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले निवेशक के लिए 6.4 प्रतिशत का ब्याज प्रभावी रूप से 4.48 प्रतिशत रह जाता है, जो 5 प्रतिशत महंगाई से भी कम है। ऐसे में वास्तविक रिटर्न नकारात्मक हो सकता है।

लिक्विड फंड बन सकते हैं विकल्प

कम अवधि के निवेश के लिए लिक्विड फंड भी निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रमुख लिक्विड फंड ने पिछले एक वर्ष में 6.29 प्रतिशत रिटर्न दिया, जो अधिकांश एफडी योजनाओं के बराबर या उनसे बेहतर रहा। हालांकि एफडी की तरह लिक्विड फंड में रिटर्न की गारंटी नहीं होती। ये बाजार से जुड़े होते हैं और समय के साथ इनमें उतार-चढ़ाव संभव है।

फिर भी एफडी क्यों है पसंदीदा?

एफडी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसकी सुरक्षा और निश्चितता है। निवेशक को पहले से पता होता है कि उसे कब और कितना पैसा मिलेगा। एफडी विशेष रूप से इन लोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती हैः

- सेवानिवृत्त व्यक्ति
- आपातकालीन फंड रखने वाले निवेशक
- 1 से 3 वर्ष के लक्ष्यों के लिए बचत करने वाले लोग
- कम जोखिम पसंद करने वाले निवेशक

कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

- बेहतर महंगाई-समायोजित रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशक अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार निम्न विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। ■ लिक्विड फंड
- मनी मार्केट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड
- आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग्स बॉन्ड
- लंबी अवधि के लिए इक्विटी म्यूचुअल फंड

हर महिला को जरूर अपनानी चाहिए ये 5 वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स

बिजनेस डेस्क

आज की महिलाएं सिर्फ परिवार और करियर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभा रहीं, बल्कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। बदलते दौर में वित्तीय सुरक्षा और संपत्ति निर्माण महिलाओं की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका है। हालांकि, कई महिलाएं अभी भी निवेश, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पातीं, जिससे भविष्य में आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सही वित्तीय योजना और अनुशासित निवेश के जरिए महिलाएं न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित बना सकती हैं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए मजबूत आर्थिक आधार भी तैयार कर सकती हैं। नियमित निवेश, आपातकालीन फंड, पर्याप्त बीमा और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी जैसे कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। आइए जानते हैं ऐसी पांच महत्वपूर्ण वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स, जिन्हें अपनाकर महिलाएं अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बना सकती हैं।

निवेश को करें ऑटोमेटिक

नियमित निवेश की आदत बनाने का सबसे आसान तरीका है निवेश को ऑटोमेट करना। इसके लिए सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) या फिर आरडी में निवेश कर सकते हैं और हर महीने नियमित निवेश कर सकते हैं। ऑटोमैटिक निवेश की सुविधा से करियर में बदलाव या आय में उतार-चढ़ाव के दौरान भी निवेश जारी रहता है। इससे समय के साथ कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है और बिना ज्यादा निगरानी के अच्छी संपत्ति बनाई जा सकती है।

रिटायरमेंट के लिए अलग फंड बनाएं

रिटायरमेंट प्लानिंग को टालना भविष्य में आर्थिक परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसे में करियर की शुरुआत से ही आय का एक हिस्सा रिटायरमेंट फंड के लिए अलग रखना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी खर्च और अन्य दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए भी अलग निवेश योजना बनाना फायदेमंद रहता है। समय-समय पर इन निवेशों की समीक्षा करना भी जरूरी है।

अपने फैसले खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

वित्तीय फैसलों की जिम्मेदारी खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

मजबूत इमरजेंसी फंड तैयार करें

जीवन में कब कौन सी चुनौती सामने आ जाए, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। नौकरी छूटना, स्वास्थ्य संबंधी समस्या या कोई अन्य अप्रत्याशित खर्च आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा कवरेज ही काम आता है।

ईपीएफ का छिपा फायदा

8.25% ब्याज, लेकिन असली रिटर्न 11.8%

विशेषज्ञों का मानना है कि ईपीएफ केवल बचत का माध्यम नहीं, बल्कि रिटायरमेंट योजना की रीढ़ है। नियमित योगदान, चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ, कर छूट और सरकारी निगरानी इसे एक भरोसेमंद निवेश बनाती है। यदि कर्मचारी नौकरी के शुरुआती वर्षों से ही ईपीएफ को गंभीरता से लें और बीच में निकासी से बचें, तो रिटायरमेंट तक एक बड़ा कोष तैयार किया जा सकता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

भारत में नौकरीपेशा लोगों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) लंबे समय से रिटायरमेंट बचत का एक भरोसेमंद माध्यम रहा है। हर महीने वेतन से कटने वाली राशि और उस पर मिलने वाला ब्याज कर्मचारियों को भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि कई लोग ईपीएफ को केवल एक अनिवार्य बचत योजना मानते हैं और इसकी तुलना म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों से करते हुए इसे कम रिटर्न वाला निवेश समझ बैठते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ईपीएफ की वास्तविक ताकत केवल इसकी घोषित ब्याज दर में नहीं, बल्कि इसके साथ मिलने वाले कर लाभ और पूंजी सुरक्षा में छिपी है। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत की दर से ब्याज मिल रहा है। पहली नजर में यह रिटर्न सामान्य लग सकता है, लेकिन यदि कर लाभों को भी जोड़कर देखा जाए तो पुराने टैक्स रिजीम में 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले कर्मचारियों के लिए इसका प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार ईपीएफ को नौकरीपेशा लोगों के लिए सबसे मजबूत और सुरक्षित रिटायरमेंट निवेश विकल्पों में गिनते हैं।

टैक्स छूट, टैक्स-फ्री ब्याज और सुरक्षित निवेश का लाभ

आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत उसे लगभग 30 हजार रुपये तक की टैक्स बचत मिल सकती है। इसका मतलब यह हुआ कि कर्मचारी की जेब से वास्तविक रूप से केवल 70 हजार रुपये का खर्च हुआ, लेकिन ब्याज पूरे 1 लाख रुपये पर मिलेगा। 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर के हिसाब से एक वर्ष में 8,250 रुपये का ब्याज प्राप्त होगा। यदि इस ब्याज को वास्तविक निवेश यानी 70 हजार रुपये के अनुपात में देखा जाए तो प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत के बराबर बैठता है। यही वह गणित है जिसे कई कर्मचारी नजरअंदाज कर देते हैं और केवल घोषित ब्याज दर देखकर ईपीएफ के वास्तविक लाभ का आकलन नहीं कर पाते।

ईपीएफ की बड़ी ताकत है ईपीएफ टैक्स सुविधा

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार EPF की सबसे बड़ी विशेषता इसका ईईई टैक्स ढांचा है। भारत में बहुत कम निवेश विकल्प ऐसे हैं जो यह तीनहरा लाभ प्रदान करते हैं। पहला लाभ निवेश के समय मिलता है। कर्मचारी द्वारा ईपीएफ में जमा की गई राशि पर धारा 80सी के तहत कर छूट का दावा किया जा सकता है। दूसरा लाभ निवेश अवधि के दौरान मिलता है। ईपीएफ खाते में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। तीसरा लाभ निकासी के समय मिलता है। यदि कर्मचारी ने पांच वर्ष या उससे अधिक समय तक लगातार सेवा की है, तो ईपीएफ से निकाली गई राशि भी कर मुक्त रहती है। यानी निवेश से लेकर निकासी तक तीनों चरणों में कर राहत मिलती है। यही वजह है कि ईपीएफ को कर-कुशल निवेश विकल्प माना जाता है।

कैसे बढ़ जाता है ईपीएफ का वास्तविक रिटर्न?

अधिकांश निवेशक किसी भी योजना का मूल्यांकन केवल उस पर मिलने वाले ब्याज या रिटर्न के आधार पर करते हैं। लेकिन ईपीएफ के मामले में यह तरीका पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। इसकी वजह यह है कि ईपीएफ निवेश पर कर छूट का अतिरिक्त लाभ मिलता है। मान लीजिए कोई कर्मचारी एक वर्ष में ईपीएफ में 1 लाख रुपये का योगदान करता है। यदि वह पुराने टैक्स रिजीम में है और 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब के अंतर्गत आता है, तो

नए टैक्स रिजीम में भी बना हुआ है आकर्षण

सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम में धारा 80सी के तहत मिलने वाली अधिकांश कर छूट समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कुछ लोगों को लगता है कि ईपीएफ का महत्व कम हो गया है। हालांकि ऐसा पूरी तरह सही नहीं है। भले ही नए टैक्स रिजीम में ईपीएफ योगदान पर कर छूट न मिले, लेकिन खाते में मिलने वाला ब्याज अभी भी कर मुक्त रहता है और निर्धारित शर्तों के तहत निकासी पर भी टैक्स नहीं लगता। इसलिए यह योजना आज भी रिटायरमेंट बचत के लिए एक आकर्षक विकल्प बनी हुई है। हालांकि वर्तमान नियमों के अनुसार कर्मचारी के 2.5 लाख रुपये से अधिक वार्षिक योगदान पर मिलने वाले अतिरिक्त ब्याज के एक हिस्से पर कर लगाया जा सकता है। यह प्रावधान मुख्य रूप से उच्च आय वाले कर्मचारियों पर लागू होता है।

सही होम लोन के चुनाव से मिलेगा बड़ा फायदा

मोरेटोरियम, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन व बैलून पेमेंट से अति. लाभ | होम लोन का चयन करने से पहले विकल्पों को अच्छी तरह समझें

बिजनेस डेस्क

आज के समय में अपना घर खरीदना अधिकांश लोगों का सपना होता है, लेकिन लगातार बढ़ती प्रॉपर्टी कीमतों के कारण यह सपना पूरा करना आसान नहीं रह गया है। ऐसे में होम लोन लाखों लोगों के लिए घर खरीदने का सबसे बड़ा सहारा बनता है। हालांकि होम लोन लेते समय अधिकांश लोग केवल ब्याज दर और ईएमआई पर ध्यान देते हैं, जबकि बैंक और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार कई तरह के लोन विकल्प भी उपलब्ध कराती हैं। इन विकल्पों में मोरेटोरियम लोन, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम और बैलून पेमेंट लोन प्रमुख हैं। प्रत्येक योजना की अपनी विशेषताएं, फायदे और कुछ सीमाएं हैं। इसलिए किसी भी होम लोन का चयन करने से पहले इन विकल्पों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

मोरेटोरियम लोन देता है राहत

मोरेटोरियम लोन उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जो कुछ समय के लिए आर्थिक दबाव का सामना कर रहे हों या भविष्य में उनकी आय बढ़ने की संभावना हो। इस योजना में उधारकर्ता को एक निश्चित अवधि तक नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। हालांकि यह सुविधा पूरी तरह मुफ्त नहीं होती। मोरेटोरियम अवधि के दौरान भी लोन पर ब्याज लगातार जुड़ता रहता है। बाद में यह ब्याज मूल बकाया राशि में जोड़ दिया जाता है।

नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना

वर्तमान समय में बड़ी संख्या में लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में घर खरीदते हैं। ऐसे खरीदारों के लिए नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम आकर्षक विकल्प हो सकती है। इस योजना में घर का कब्जा मिलने तक खरीदार को नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। कई मामलों में बिल्डर इस अवधि के दौरान ब्याज या ईएमआई का खर्च वहन करता है। इससे खरीदार पर तत्काल वित्तीय बोझ कम हो जाता है। यह योजना विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद मानी जाती है जो वर्तमान में किराए के मकान में रह रहे हैं और साथ ही नया घर भी खरीद रहे हैं। इससे उन्हें एक साथ किराया और ईएमआई दोनों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुविधा की लागत अक्सर किसी न किसी रूप में प्रॉपर्टी की कीमत में शामिल हो सकती है। इसलिए ग्राहकों को योजना के सभी नियम और शर्तें ध्यान से पढ़नी चाहिए।

बैलून पेमेंट लोन बेहतर

बैलून पेमेंट लोन पारंपरिक होम लोन से थोड़ा अलग होता है। इसमें शुरुआती वर्षों के दौरान ईएमआई अपेक्षाकृत कम रखी जाती है, जिससे मासिक भुगतान का दबाव कम रहता है। लेकिन लोन की अवधि के अंतिम चरण में उधारकर्ता को एक बड़ी राशि एकमुश्त चुकानी होती है। इसी बड़े अंतिम भुगतान को बैलून पेमेंट कहा जाता है। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें भविष्य में आय में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद हो। उदाहरण के लिए किसी कर्मचारी को बड़े बोनस, ईएसओपी (ईएसओपी) से लाभ या वेतन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की संभावना हो। वहीं व्यवसायियों को भविष्य में किसी बड़े लाभ की उम्मीद हो सकती है। हालांकि यदि अनुमानित आय वृद्धि नहीं होती तो अंतिम भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए इस विकल्प को चुनते समय वित्तीय स्थिति का वास्तविक आकलन करना जरूरी है।

लोन लेते समय रखें ध्यान

होम लोन का कोई भी विशेष विकल्प चुनने से पहले केवल कम ईएमआई या शुरुआती राहत को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। यह समझना जरूरी है कि लंबे समय में कुल भुगतान कितना होगा और अतिरिक्त सुविधाओं की वास्तविक लागत क्या है। ग्राहकों को लोन की कुल अवधि, कुल ब्याज भुगतान, संभावित जोखिम और अपनी भविष्य की आय की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इसके अलावा सभी नियमों और शर्तों को विस्तार से पढ़ना भी जरूरी है।

जरूरत अनुसार चुनें सही विकल्प

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और जरूरत अलग होती है। इसलिए कोई भी एक लोन योजना सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। जहां मोरेटोरियम लोन अस्थायी राहत प्रदान करता है, वहीं नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना निर्माणाधीन मकान खरीदने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। दूसरी ओर बैलून पेमेंट लोन उन लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जिन्हें भविष्य में अधिक आय की उम्मीद हो। विशेषज्ञों का मानना है कि सही जानकारी और सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के साथ चुना गया होम लोन न केवल घर खरीदने का सपना पूरा करता है, बल्कि लंबे समय तक वित्तीय संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

डबल इनकम, डबल सुरक्षा : नौकरीपेशा दंपतियों के लिए कुछ जरूरी वित्तीय नियम

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं तो सही बजट, नियमित संवाद जरूरी

बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। नियमित स्वास्थ्य जांच, मेडिकल इमरजेंसी फंड और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा परिवार को अचानक आने वाले खर्चों से बचा सकते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा भी परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, तो परिवार की आय बढ़ने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बढ़ जाते हैं। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और सुरक्षित रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्य अपेक्षाकृत आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि दोहरी आय के साथ वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। कई बार खर्च, बचत और निवेश को लेकर स्पष्ट योजना न होने से मतभेद और आर्थिक असंतुलन पैदा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि डबल इनकम वाले दंपतियों के लिए नियमित वित्तीय चर्चा, साझा बजट, व्यक्तिगत और संयुक्त खर्चों के बीच संतुलन, पर्याप्त बीमा और अनुशासित निवेश बेहद जरूरी हैं। यदि दोनों साथी मिलकर स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य तय करें और उनके अनुसार योजना बनाएं, तो न केवल वर्तमान जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी की जा सकती हैं, बल्कि भविष्य की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी आसानी से किया जा सकता है। छोटी-छोटी वित्तीय आदतें लंबे समय में बड़ी सफलता की नींव बनती हैं।

'मेरा, तुम्हारा और हमारा' फॉर्मूला अपनाएं

शादी के बाद भी आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व बना रहता है। इसके लिए आय को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक हिस्सा साझा खर्चों और पारिवारिक लक्ष्यों के लिए, जबकि बाकी दोनों पार्टनर के व्यक्तिगत खर्चों के लिए रखा जा सकता है। इससे जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच संतुलन बना रहता है।

पैसों को लेकर खुलकर करें बातचीत

अक्सर दंपति आय और खर्चों को लेकर नियमित चर्चा नहीं करते, जिससे कई बार गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर महीने एक तय समय पर बैठकर आय, खर्च, बचत और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करनी चाहिए। इससे वित्तीय फैसले पारदर्शी बनते हैं और आपसी विश्वास भी मजबूत होता है।

सही वित्तीय योजना से रख सकते हैं सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की मजबूत नींव

मिलकर बनाएं संतुलित बजट

दोनों की कुल आय को ध्यान में रखते हुए मासिक बजट तैयार करना जरूरी है। इसमें घर का किराया, राशन, बच्चों की जरूरतें, यात्रा और अन्य नियमित खर्चों के साथ भविष्य के लक्ष्यों के लिए भी राशि निर्धारित करनी चाहिए। एक व्यवस्थित बजट अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने में मदद करता है।

बचत और निवेश को बनाएं आदत

दोहरी आय का सबसे बड़ा लाभ तभी मिलता है जब उसका एक हिस्सा नियमित रूप से बचत और निवेश में लगाया जाए। विशेषज्ञ कम से कम छह महीने के खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह देते हैं। इसके बाद जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में निवेश किया जा सकता है।

छोटी आदतें, बड़ा फायदा

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी और अनुशासित आदतों से हासिल होती है। नियमित संवाद, सही बजट, पर्याप्त सुरक्षा और व्यवस्थित निवेश के जरिए डबल इनकम वाले दंपति अपने सपनों को तेजी से पूरा कर सकते हैं और भविष्य को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

सड़क हादसे में घायल महिला ने तोड़ा दम

रोहतक। कलानौर क्षेत्र में हुए सड़क हादसे में घायल महिला की उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतका की पहचान शरबती के रूप में हुई है, जो 19 मई को एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गई थी। जानकारी के अनुसार, 19 मई को तेज रफ्तार से आ रही एक गाड़ी ने शरबती को टक्कर मार दी थी। हादसा इतना गंभीर था कि वह बुरी तरह घायल हो गई। दुर्घटना में एक अन्य महिला भी घायल हुई थी। दोनों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

होटल में घुसकर कर्मचारी पर हमला

रोहतक। अर्बन स्टेट थाना पुलिस ने नए बस स्टैंड के समीप स्थित निजी होटल में कर्मचारी से मारपीट और तोड़फोड़ करने के मामले में करीब एक दर्जन अज्ञात युवकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है। पुलिस को दी शिकायत में होटल कर्मचारी अमित निवासी रेवाड़ी खेड़ा, जिला भिवानी ने बताया कि वह होटल में नौकरी करता है। 8 जून की रात करीब 3 बजे मोटरसाइकिल पर सवार तीन युवक होटल में कमरा लेने आए थे।

19 वर्षीय युवक व 14 वर्षीय किशोरी लापता

रोहतक। जिले में युवक और किशोरी के लापता होने के दो अलग-अलग मामले सामने आए हैं। सदर थाना और अर्बन स्टेट थाना पुलिस ने परिजनों की शिकायत पर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। सदर थाना पुलिस को दी शिकायत में गांव कटवाड़ा निवासी सुनीता पत्नी मंगतराम ने बताया कि उसका 19 वर्षीय बेटा मनीष 10 जून की सुबह करीब 9 बजे गोहाना (सोनीपत) गया था।

इंस्टाग्राम और बैंक खाते से लाखों की ठगी

रोहतक। साइबर ठगी के दो अलग-अलग मामलों में पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एक मामले में इंस्टाग्राम पर फ्री मूवी दिखाने वाले विज्ञापन के जरिए युवक के खाते से 98 हजार रुपये उड़ा लिए गए, जबकि दूसरे मामले में बैंक खाते से एक लाख रुपये से अधिक की रकम निकाल ली गई।

जिले भर में बनाए जाएंगे आठ परीक्षा केंद्र, सुरक्षा के रहेंगे पुख्ता इंतजाम

डीसी ने नीट परीक्षा को लेकर तैयारियों की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

आगामी 21 जून को होने वाली नीट-यूजी परीक्षा को पारदर्शी, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न करवाना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह बात डीसी वर्षा खांगवाल ने शनिवार को नीट-यूजी परीक्षा के सफल एवं सुचारू संचालन को लेकर मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी की वीसी उपरांत अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कही। उन्होंने परीक्षा से संबंधित तैयारियों की समीक्षा करते हुए निर्देश देते हुए कहा कि सभी परीक्षा केंद्रों पर पेयजल, बिजली, स्वच्छ शौचालय और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

झज्जर। बैठक में नीट-यूजी परीक्षा की तैयारियों की समीक्षा करते हुए डीसी वर्षा खांगवाल। फोटो हरिभूमि

जिले में बनाए जाएंगे आठ परीक्षा केंद्र

डीसी ने बताया कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित होने वाली नीट-यूजी परीक्षा के लिए जिले में आठ परीक्षा केंद्र स्थापित किए जाएंगे। अभ्यर्थियों को सुबह 11 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक परीक्षा केंद्रों पर पहुंचना अनिवार्य होगा, जबकि परीक्षा दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित की जाएगी।

दिव्यांगों को सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था होगी मजबूत

दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधाओं के निर्देशः डीसी ने निर्देश दिए कि एनटीए द्वारा निर्धारित सभी प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन किया जाए। परीक्षा केंद्रों पर पेयजल, प्राथमिक चिकित्सा, एम्बुलेंस, स्वच्छ शौचालय सहित सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। सुरक्षा व्यवस्था रहेगी चाक-चौबंद, संदिग्ध गतिविधियों पर होगी कड़ी निगरानीः डीसी ने कहा कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की अनियमितता ना हो,इसके लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित की जाए। जिससे परीक्षा निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो सके।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच से बीमारियों की होगी पहचान

झज्जर। नागरिक अस्पताल में लोगों को निरोगी हरियाणा कार्यक्रम की जानकारी देते हुए स्वास्थ्यकर्मी। फोटो हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

प्रदेश सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम निरोगी हरियाणा के अंतर्गत जिले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। सीएमओ डॉक्टर मंजू कादियान ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं लैब परीक्षण सुविधाओं का लाभ उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 5 लाख 60 हजार लाभार्थी हैं, जिनमें से अब तक 3 लाख 60 हजार से अधिक लोगों की स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की जा चुकी है। इस प्रकार जिले की करीब 70 प्रतिशत आबादी की स्वास्थ्य जांच सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी है।

अस्पताल में मरीजों और तीमारदारों को योजना की जानकारी देते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत रक्तचाप, वजन, बीएमआई, मधुमेह जांच, हृदय रोग जोखिम मूल्यांकन, कैंसर स्क्रीनिंग, चिकित्सकीय परामर्श तथा आवश्यकता अनुसार रेफरल सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिला नोडल अधिकारी व उप सिविल सर्जन डॉक्टर सुनीता तंवर ने कहा कि नियमित स्वास्थ्य जांच से गंभीर बीमारियों की समय रहते पहचान संभव हो पाती है। नागरिक अस्पताल की मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर राशि ने बताया कि अस्पताल में आने वाले मरीजों की अधिक से अधिक स्क्रीनिंग कर उन्हें योजना के लाभों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा सीबीसी, हीमोग्लोबिन, ब्लड शुगर, सीरम कोलेस्ट्रॉल, ब्लड यूरिया, सीरम क्रिएटिनिन, यूरिन जांच, टीएसएच तथा पुरुषों के लिए पीएसए जैसी महत्वपूर्ण जांचें भी निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं।

डीसी से मिले दलित महासभा के प्रदेशाध्यक्ष

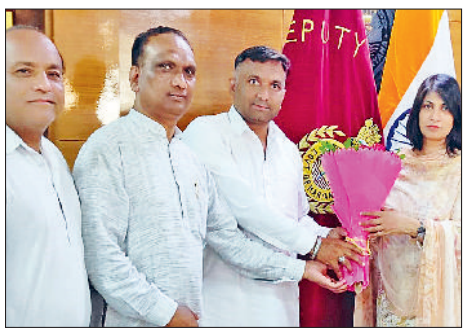
बहादुरगढ़। डीसी वर्षा खांगवाल को गुलदस्ता भेंट करते बिजेंद्र लुखड़। फोटो हरिभूमि

बहादुरगढ़। दलित महासभा हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष बिजेंद्र लुखड़ ने जिला उपायुक्त वर्षा खांगवाल से मुलाकात की। उन्होंने बहादुरगढ़ उपमंडल के गांव कानौंदा में आकर ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने और समाधान करवाने का अनुरोध किया। उनके साथ चांद सिंह महाराज, प्रदीप गोछी व साहिल कसार आदि ने डीसी से मुलाकात की।

स्वास्थ्य जांच के साथ-साथ बताए लू से बचने के उपाय

झज्जर। स्वास्थ्य जांच कराने के लिए शिविर में उपस्थित ग्रामीण। फोटो हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज रिसर्च एंड हॉस्पिटल गिरावड़ द्वारा क्षेत्र के गांव दुल्हेड़ा स्थित बड़ी चौपाल में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अस्पताल के मेडिसिन विभाग, सर्जरी, नेत्र रोग, ईएनटी, हड्डी रोग, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग के चिकित्सकों ने सेवाएं दीं। बड़ी संख्या में लोगों ने शिविर में पहुंच कर अपनी स्वास्थ्य जांच कराई। इस दौरान चिकित्सकों द्वारा जरुरतमंद लोगों में जहां निःशुल्क दवाओं का वितरण किया वहीं उन्हें स्वास्थ्य की देखभाल संबंधी आवश्यक परामर्श भी दिया गया। चिकित्सकों ने शिविर में पहुंचे लोगों को लू से बचने के उपायों संबंधी जानकारी भी दी। कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के डॉक्टर रजत गुप्ता व डॉक्टर शिवम सिंह ने बताया कि संस्थान के संस्थापक डॉक्टर नरेंद्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस शिविर के दौरान लोगों को स्वास्थ्य की उचित देखभाल से भी अवगत कराया गया।

शांति व भाईचारे की भावना बढ़ाने के उद्देश्य से करवाया हवन व शांति पाठ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव डीघल स्थित नई गोशाला में शनिवार को हवन व शांति पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्राचीन गुरुकुल महाविद्यालय के अधिष्ठाता आचार्य विजयपाल ने विद्यार्थियों के साथ भागीदारी करते हुए शांतिपाठ कराया। उन्होंने बताया कि आपसी सहयोग व भाईचारे की भावना को बनाए रखने के उद्देश्य से शांति पाठ का आयोजन किया गया। इस शांति संदेश को समस्त क्षेत्र में कायम करने के लिए विभिन्न खापों, किसान संगठनों और सामाजिक बुद्धिजीवी वर्ग ने सहभागिता की। उन्होंने गांव के युवाओं से आह्वान किया कि वे शांति, सद्भाव बनाए रखें। हवन में अहलावत 27 के प्रधान जय सिंह अहलावत, धनखड़ खाप प्रधान डॉक्टर ओमप्रकाश धनखड़, दहिया खाप प्रधान सुरेंद्र दहिया, आहुलाना 12 के प्रधान मलिक राज मलिक, खाप प्रवक्ता अत्तर सिंह कादियान, रामभगत कोच, प्रदीप हुड्डा, कृष्ण कादियान, रोहतक 84 के प्रधान हरदीप अहलावत, नरसिंह, सुंदर सिंह सांगवान, महेंद्र सिंह नांदल, पूर्व सरपंच मांगेराम, जयभगवान पहलवान, पूनिया खाप प्रवक्ता सतबीर सिंह, धनखड़ खाप के उपप्रधान कप्तान सिंह, हैड मास्टर मांगेराम, पूर्व सरपंच पवन, ढोलू पहलवान, अमित ढाकला, रामकुमार, अंगद पहलवान, लीला पहलवान, दीपक, अशोक, कृष्ण, प्रेम सिंह सांगवान आदि ने आहुति डालकर भाईचारे व शांति की कामना की।

झज्जर। आचार्य विजयपाल के साथ हवन में आहुति डालते हुए विभिन्न खाप व संगठनों के प्रतिनिधि। फोटो हरिभूमि

छात्रों ने संभाली मतदाता जागरूकता की कमान

झज्जर। रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेते हुए विद्यार्थी। फोटो हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में चलाए जा रहे स्वीप अभियान के तहत स्कूलों के विद्यार्थी मतदाता जागरूकता का संदेश घर-घर तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। जिले के विभिन्न सरकारी एवं निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा रैलियां, जागरूकता शपथ, पोस्टर मेकिंग, निबंध लेखन तथा जनसंपर्क गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि विद्यार्थियों के माध्यम से जागरूकता का संदेश समाज के प्रत्येक वर्ग तक प्रभावी ढंग से पहुंच रहा है। युवा पीढ़ी लोकतांत्रिक मूल्यों की सच्ची वाहक है और उनकी सहभागिता से स्वीप अभियान को नई ऊर्जा मिल रही है। विद्यार्थी अपने अभिभावकों, परिजनों और आसपास के नागरिकों को मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने, अपने विवरणों को अद्यतन रखने तथा लोकतंत्र के इस महापर्व में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

सेल्फी विवाद पर मंत्री राव नरबीर के खिलाफ नाराजगी बढ़ी

बहादुरगढ़। ब्लॉक समिति सदस्य आर्य प्रमोद छारा ने शुक्रवार को झज्जर के संवाद भवन में हुई कष्ट निवारण समिति की बैठक में कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह के व्यवहार की कठोर शब्दों में निंदा की है। उनका कहना है कि लोग बैठक में अपनी तकलीफें लेकर आए थे, लेकिन मंत्री ने उनके साथ अहंकारी व्यवहार किया। इस सिलसिले में एक वीडियो भी वायरल हो रहा है। जिसमें प्रमोद आर्य ने मंत्री से सेल्फी खिंचवाने का आग्रह किया। लेकिन राव नरबीर ने उन्हें झटक दिया। आर्य प्रमोद ने इस आचरण की आलोचना करते हुए मानहानि का केस करने की चेतावनी दी है।

- लोग लाए थे तकलीफें, लेकिन मंत्री ने किया अहंकारी व्यवहार

नुक्कड़ नाटक से दी कचरा प्रबंधन की जानकारी

झज्जर। टाउन पार्क में नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति देते हुए टीम सदस्य।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से नगर परिषद द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जा रहा है। शनिवार को दिल्ली के कलाकारों द्वारा नुक्कड़ नाटक माध्यम से लोगों को साफ-सफाई के तरीके, कचरा प्रबंधन आदि के लिए जागरुक किया गया। अंबेडकर चौक पर जहां उन्होंने अलग-अलग रंग के डब्बों में डाले जाने वाले कचरे की जानकारी लोगों को दी वहीं टाउन पार्क में नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर लोगों को सफाई के अभाव में होने वाली हानियों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि स्वच्छता के अभाव में लोग बीमारियों की चपेट में भी आ सकते हैं। टीम में अभिमन्यु, धनंज्य, आजाद, अरुण, शुभी, अंकित, मनय, अनीषा, हिमांशु, शशांक व अक्षत शामिल रहे। सफाई दरोगा मुकेश सोनी ने बताया कि यह अभियान शहर में निरतंर जारी रहेगा। नुक्कड़ नाटक से प्रेरणा लेकर लोग सफाई को लेकर सचेत भी हो रहे हैं। इस दौरान शहरवासियों को स्वच्छता अपनाने संबंधी शपथ भी दिलाई गई।

क्लस्टर प्रमुखों की बैठक में शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर दिया जोर

स्कूल में मुखिया एक लाख रुपये से पूरी कर सकते हैं बुनियादी सुविधाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सभागार में शनिवार को सभी क्लस्टर प्रमुखों की बैठक हरियाणा शिक्षा विभाग के उप निदेशक शमशेर सिंह की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान अपने संबोधन में शमशेर सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं को लेकर अत्यधिक गंभीर हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक स्कूल में लड़कों व लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय होने चाहिए, पेयजल, बिजली की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अलावा मिड-डे मील विभागीय मानदंडों के अनुसार ही दिया जाए और स्कूलों की चार दीवारी होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि विभाग ने पहले ही पत्र जारी कर दिया है कि स्कूल मुखिया एक बार में एक लाख रुपये बुनियादी सुविधाओं पर खर्च कर सकता है, और एक वर्ष में पांच बार ऐसा कर सकता है।

झज्जर। बैठक के दौरान उपस्थित क्लस्टर प्रमुखों को संबोधित करते हुए विभागीय अधिकारी। फोटो हरिभूमि

डिजिटल पैनल और पुस्तकालयों के उपयोग के दिए निर्देश

यदि स्कूल में धनराशि उपलब्ध न हो तो जिला परियोजना समन्वयक को अवगत कराया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि डिजिटल पैनल, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों का उचित उपयोग सुनिश्चित किया जाए। किसी भी कमरे में टूटा फर्नीचर न रखा जाए। बैठक में जिला निपुण समन्वयक डॉक्टर सुदर्शन पूनिया ने मंच संचालन किया और पैरेंट्स ऐप और ग्रीष्मावकाश में माता-पिता द्वारा घर पर कराए जाने वाले होमवर्क गतिविधियों की जानकारी दी। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी रतिंद्र सिंह, प्रिंसिपल डाइट अनिल श्योराण, जिला परियोजना समन्वयक अनिल शर्मा, उप जिला शिक्षा अधिकारी रूपिंदर नांदल, देवेंद्र सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी शेर सिंह, जयपाल दहिया, सुनीता देवी सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

एक पेड़ मां के नाम

सूचना

मैं, छतरपाल सिंह पुत्र श्री इंद्र सिंह निवासी गांव आसौदा सिवान, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र योगेश व पुत्रवधु ममता मेरे कहने सुनने से बाहर हैं और मैं उनसे अपने तमाम संबंध समाप्त करते हुए अपनी चल-अचल संपति से बेदखल करता हूं। भविष्य में उनके साथ किसी तरह का लेन-देन करने व व्यवहार रखने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। योगेश व उसकी पत्नी ममता अपने प्रत्येक कार्य के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगे। मेरा व मेरे परिवार के सदस्यों का उनसे कोई संबंध व सरोकार नहीं रहा।

सूचना

मैं, गया प्रसाद पुत्र शीतला दीन निवासी शिवराज पुर भट्टपुरा दौह, अमेठी, उत्तर प्रदेश हाल निवासी शास्त्री नगर, बहादुरगढ़, जिला झज्जर बयान करता हूं कि मेरा खाता नंबर 012190200014781 वस बैंक, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा में है। मेरे बैंक खाते में मेरा नाम गया प्रसाद शर्मा पुत्र श्री शीतला प्रसाद शर्मा गलत लिखा हुआ है। जबकि आधार कार्ड में मेरा सही नाम गया प्रसाद पुत्र शीतला दीन लिखा है। इस बैंक खाते में भी मेरा सही नाम गया प्रसाद पुत्र शीतला दीन दर्ज करवाया जाए।

खबर संक्षेप

लापता जिम संचालक का सुराग नहीं लगा

बहादुरगढ़। सांखोल निवासी जिम संचालक विकास राठी शुक्रवार सुबह अपने घर से निकला था, लेकिन शनिवार शाम तक वापस नहीं लौटे। परिजनों के अनुसार विकास राठी सुबह किसी काम से घर से निकले थे, जिसके बाद उनका परिवार से संपर्क नहीं हो सका। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने परिजनों की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। विकास के लापता होने से परिवार चिंतित है।

तीन दिन के रिमांड पर लिया लूट का आरोपी

बहादुरगढ़। थाना असौदा पुलिस टीम ने क्षेत्र में हुई 8 लाख रुपये की लूट के मामले में गिरफ्तार आरोपी को तीन दिन के रिमांड पर लेकर पूछताछ की जा रही है। बता दें कि 8 लाख रुपये नकद लेकर जा रहे परिवार को रोहद टोल के पास स्विफ्ट कार में सवार युवकों ने रुकवाया। आरोपियों ने स्वयं को पुलिसकर्मी बताकर डराया-धमकाया तथा नकदी लेकर मौके से फरार हो गए थे। पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों, सीसीटीवी फुटेज तथा अन्य सुरागों के आधार पर वारदात में शामिल आरोपी पंकज निवासी जौंधी को गिरफ्तार किया था। उसकी निशानदेही से वारदात में प्रयुक्त स्विफ्ट बरामद कर ली गई थी। आरोपी पंकज को शनिवार अदालत में पेश किया गया। जहां से 3 दिन के रिमांड पर पुलिस को सौंप दिया गया।

केंद्र सरकार के 12 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में चलाया अभियान

विधायक ने डीसी व एसडीएम के साथ मिलकर लगाए पौधे

सेक्टर-13 की ग्रीन बेल्ट में और बढ़ेगी हरियाली

- पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक को पौधरोपण पर जोर देना चाहिए : विधायक राजेश जून
- उप वन संरक्षक पन्नाला साहिती रेड्डी ने सभी का स्वागत किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

केंद्र सरकार के गौरवशाली 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शनिवार को सेक्टर-13 की ग्रीन बेल्ट में पौधारोपण अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक राजेश जून उपस्थित रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में डीसी वर्षा खांगवाल शामिल हुईं। एसडीएम अभिनव सिवाच भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

उप वन संरक्षक पन्नाला साहिती रेड्डी ने सभी का स्वागत किया। विधायक राजेश जून और डीसी वर्षा खांगवाल ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का आह्वान किया।

विधायक राजेश जून ने कहा कि वर्ष 2014 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत पिछले 12 वर्षों से निरंतर विकास और उन्नति के पथ पर अग्रसर है। इस दौरान देश की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत हुई तथा आतंकवाद पर प्रभावी अंकुश लगाया गया। सभी वर्गों के कल्याण के लिए अनेक जनहितकारी योजनाएं शुरू की गईं। पहले जहां हर साल लगभग 7 हजार डॉक्टर बनते थे, वहीं अब लगभग 17 हजार 800 हो गई है। विधायक राजेश जून ने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक को पौधरोपण पर जोर देना चाहिए और प्लास्टिक के उपयोग को कम करना चाहिए।

12 साल में 25 लाख से अधिक पौधे लगाए

डीसी वर्षा खांगवाल ने नागरिकों से पौधरोपण अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की। डीसी ने कहा कि सामूहिक प्रयासों से ही स्वच्छ, स्वस्थ और हरित वातावरण का निर्माण संभव है। उप वन संरक्षक पन्नाला साहिती रेड्डी ने बताया कि 12 वर्षों में झज्जर जिले में 25 लाख से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं तथा वन विभाग भविष्य में इस अभियान को आगे बढ़ा रहा है। इस अवसर पर एसडीएम अभिनव सिवाच, वन राजकीय अधिकारी श्रीभगवान, क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट से वजीर दहिया व प्रदीप रेढ़ू आदि उपस्थित रहे।

विधायक व डीएमसी ने आंबेडकर स्टेडियम में की सफाई, दिया स्वच्छता का संदेश

बहादुरगढ़। शनिवार को विधायक राजेश जून व डीएमसी अभिनव सिवाच ने आंबेडकर स्टेडियम में स्वयं झाड़ू लगाकर स्वच्छता का संदेश दिया। विशेष स्वच्छता अभियान के माध्यम से नागरिकों को स्वच्छता अपनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ भीमराव आंबेडकर स्टेडियम के साथ लगते वार्ड -25 में शनिवार को विशेष सफाई की गई तथा नालों से कचरा एवं गंदगी हटाकर उन्हें साफ कराया गया। विधायक ने कहा कि स्वच्छ और सुंदर शहर के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने आमजन से स्वच्छता बनाए रखने और शहर को साफ-सुथरा बनाने में सक्रिय योगदान देने की अपील की। डीएमसी अभिनव सिवाच ने कहा कि नगर परिषद द्वारा शहर में नियमित रूप से स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। उन्होंने नागरिकों से कूड़ा निर्धारित स्थानों पर ही डालने तथा स्वच्छता बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर नप के ईओ संजय रोहिल्ला, सचिव प्रवीण छिकारा व सफाई निरीक्षक सुनील हुड्डा आदि उपस्थित रहे।

डॉ भीमराव आंबेडकर स्टेडियम के साथ लगते वार्ड नंबर-25 में शनिवार को विशेष सफाई की गई तथा नालों से कचरा एवं गंदगी हटाकर उन्हें साफ कराया

बहादुरगढ़। लंदन में शतीश नंबरदार को सम्मान देते आयोजक।

शतीश नंबरदार को लंदन में मिला अवॉर्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

हाउस ऑफ लॉर्ड्स में हुए कार्यक्रम में सोशल वर्कर ऑफ द ईयर सम्मान से नवाजा

नंबरदार एसोसिएशन के चेयरमैन शतीश राठी को लंदन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में आयोजित ग्लोबल ब्रांड एंड लीडरशिप कॉन्क्लेव एंड अवार्ड्स-2026 में सोशल वर्कर ऑफ द ईयर सम्मान से नवाजा गया। समाज के वंचित, गरीब व जरूरतमंदों के उत्थान में उल्लेखनीय योगदान और मानवीय कार्यों के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया।

दरअसल, इस कार्यक्रम में भारत व ब्रिटेन समेत कई देशों के राजनयिकों, नेताओं, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान नंबरदार शतीश राठी के सामाजिक समर्पण, जनकल्याणकारी सोच और मानवता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की विशेष रूप से सराहना की गई। पूर्व मंत्री स्व. चौधरी मांगेराम नंबरदार के सुपुत्र शतीश राठी जरूरतमंद लोगों को भोजन, आश्रय और अन्य आवश्यक सहायता उपलब्ध करा रहे हैं। शतीश राठी ने कहा कि यह पुरस्कार निस्वार्थ भाव से मानव सेवा में जुटे हर सहयोगी का सम्मान है। उन्होंने कहा कि समाज के कमजोर और जरूरतमंद वर्गों के कल्याण के लिए उनके प्रयास भविष्य में भी निरंतर जारी रहेंगे। कार्यक्रम में पूर्व सांसद केसी त्यागी, ब्रिटेन के पूर्व मंत्री पॉल स्कली, हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य लॉर्ड रामी रेंजर आदि मौजूद रहे।

रिद्धि जोशी ने जीते 3 गोल्ड मेडल

नेशनल पैरा स्विमिंग चैंपियनशिप में 50 मीटर फ्रीस्टाइल इवेंट में 33.00 सेकेंड के साथ गोल्ड मेडल जीत बढ़ाया गौरव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। रिद्धि जोशी का स्वागत करते अनिल खत्री और साई जाधव।

बेंगलुरु में आयोजित 26वीं जूनियर और सब-जूनियर नेशनल पैरा स्विमिंग चैंपियनशिप में बहादुरगढ़ की एचएल सिटी स्थित चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी की तैराक रिद्धि जोशी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन स्वर्ण पदक जीते। प्रतियोगिता की एस-10 कैटेगरी में भाग लेते हुए 50 मीटर फ्रीस्टाइल इवेंट में 33.00 सेकेंड के साथ गोल्ड, 50 मीटर बैकस्ट्रोक में 38.00 सेकेंड के साथ गोल्ड और 100 मीटर बैकस्ट्रोक में 1 मिनट 22 सेकेंड के समय के साथ गोल्ड मेडल जीते। हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन एवं भारतीय तैराकी संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री तथा व कोच साई दिलीप जाधव ने पदक जीतकर लौटी रिद्धि का चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी में स्वागत किया गया।

शिविर में 163 युवाओं ने रक्तदान कर कमाया पुण्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। रक्तदाता को प्रोत्साहित करती डीसी, डीसीपी व अन्य और शैलजा जून को पौधा भेंट करती डॉ. ज्योति मलिक व अन्य। फोटो : हरिभूमि

शहर के जीवन ज्योति हॉस्पिटल में शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में जिला उपायुक्त वर्षा खांगवाल ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में एसडीएम अभिनव सिवाच, डीसीपी मयंक मिश्रा, जीडी गोयनका स्कूल की चेयरपर्सन शैलजा जून, मुस्कान जून व नागरिक अस्पताल के पीएमओ डॉ. विनय देशवाल मौजूद रहे। हॉस्पिटल की एमएस एवं डायरेक्टर डॉ. ज्योति मलिक तथा दीपक खट्टर ने अतिथियों का स्वागत किया।

डीसी वर्षा खांगवाल, डीसीपी मयंक मिश्रा और शैलजा जून ने रक्तदाताओं को बैज लगाकर प्रोत्साहित किया। मंच संचालन सत्येंद्र दहिया व अंजू जून ने किया। वक्ताओं ने रक्तदान के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि रक्तदान करने से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। रक्तदान अनेक लोगों की जान बचाने में अहम भूमिका निभाता है।

शिविर के समापन पर रक्तदाताओं को हॉस्पिटल की ओर से प्रशिस्त पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। वरुण मलिक व डॉ. दीपांशी ने सहयोग संस्थाओं के प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न व पौधे वितरित कर सम्मानित किया। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की स्वयंसेविकाओं ने भी कैंप के आयोजन में विशेष योगदान दिया। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष राजपाल जांगड़ा, जिला रेडक्रॉस सोसायटी से कंचन कुमार, ट्रेफिक एसएचओ सतीश कुमार, मंगू नंबरदार, यशपाल गांधी, सत्यपाल सहवाग, दीपक जैन, सुनीता छिल्लर, एनएस कपूर, जयपाल दहिया आदि कैंप में मौजूद रहे।

सेना की बास्केटबॉल टीम में आयुष का चयन

बहादुरगढ़। होनहार खिलाड़ी आयुष ने मात्र 19 वर्ष की आयु में भारतीय सेना की बास्केटबॉल टीम में स्पोर्ट्स कोटे के तहत स्थाई भर्ती हासिल कर जिले और शहर का नाम रोशन किया है। डिस्ट्रिक्ट बास्केटबॉल एसोसिएशन के उपाध्यक्ष एवं कोच गौरव सांगवान ने बताया कि आयुष ने कड़ी मेहनत, अनुशासन और खेल के प्रति समर्पण के बल पर यह उपलब्धि हासिल की है। आयुष ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने गुरु और कोच गौरव सांगवान को दिया। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने आयुष को बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरियाणा इंटर स्कूल शूटिंग चैंपियनशिप में एचडी स्कूल के यशदेव ने जीता पदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। होनहार विद्यार्थी यशदेव तंवर।

11वीं हरियाणा इंटर स्कूल शूटिंग चैंपियनशिप का आयोजन कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में किया गया। जिसमें एच डी साल्हावास के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। शूटिंग कोच सुदेश ने बताया कि हरियाणा इंटर स्कूल शूटिंग चैंपियनशिप में विद्यालय के ग्यारहवीं कक्षा के छात्र यशदेव तंवर ने अंडर-18 यूथ में सिल्वर मेडल प्राप्त कर क्षेत्र व जिले का नाम रोशन किया है, वहीं आठ विद्यार्थियों आशीष कुमार, रौनक, दक्ष, अमन जाखड़, प्रिंस, जतिन, किरण और शुभश्री ने नॉर्थ जोन के लिए क्वालीफाई किया है।

डायरेक्टर गुलिया ने दी बधाई

विद्यार्थियों की इस शानदार उपलब्धि पर एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि विद्यालय के विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी क्षेत्र का नाम चमका रहे हैं। विद्यार्थियों के उम्दा प्रदर्शन पर एच डी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया, प्राचार्या प्रीति राठी ने होनहार विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

रघुवंशी ने की चंदर नाहन झील तक ट्रेकिंग

- राजेश इससे पहले माउंट किलिमंजारो तथा यूरोप की सबसे ऊंची चोटी माउंट एल्ब्रुस पर सफलतापूर्वक कर चुके हैं चढ़ाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। ट्रेकिंग पूरी करने के बाद राजेश रघुवंशी।

हिमाचल प्रदेश की दुर्गम एवं मनमोहक चंदर नाहन झील तक सफलतापूर्वक ट्रेकिंग कर बहादुरगढ़ रनर्स ग्रुप के सदस्य राजेश रघुवंशी ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। राजेश इससे पहले माउंट किलिमंजारो (अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी) तथा माउंट एल्ब्रुस (यूरोप की सबसे ऊंची चोटी) पर सफलतापूर्वक चढ़ाई कर चुके हैं।

राजेश रघुवंशी ने इसके अलावा अन्नपूर्णा बेस कैंप, एवरेस्ट बेस कैंप, गोमुख-तपोवन ट्रेक तथा हर की दून ट्रेक जैसे प्रतिष्ठित और चुनौतीपूर्ण ट्रेक भी सफलतापूर्वक पूरे किए हैं। उनकी साहसिक यात्राएं युवाओं को प्रेरणा देती हैं। बीआरजी संयोजक दीपक छिल्लर ने बताया कि राजेश पर्वतारोहण के साथ मैराथन धावक, डुआथलॉन खिलाड़ी, हायरॉक्स एथलीट, आयरनमैन प्रतिभागी, साइक्लिस्ट, ट्रेकर एवं पर्वतारोही के रूप में भी पहचान रखते हैं।

रघुवंशी लगातार साहसिक खेलों और फिटनेस गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। बीआरजी के सदस्यों ने इस उपलब्धि पर उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

योगाभ्यास प्रशिक्षण शिविर संपन्न

योग शरीर को बनाता है सशक्तः राजेश्वर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

योग दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम परिसर में सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय योगाभ्यास प्रोटोकॉल प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हो गया। शनिवार को डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ योगाभ्यास किया। उन्होंने बताया कि योग व्यक्ति को मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाने के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि आज की व्यस्त जीवनशैली में तनाव और मानसिक दबाव एक बड़ी चुनौती बन रहे हैं। ऐसे में योग तनाव प्रबंधन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है। नियमित योगाभ्यास से व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ती है, एकाग्रता मजबूत होती है और सकारात्मक सोच के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने की क्षमता विकसित होती है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की दिशा में आगे बढ़ने का संदेश है।

योग को दैनिक दिनचर्या में शामिल करें:डॉ. नीलम

बहादुरगढ़। डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में आयोजित तीन दिवसीय योग प्रोटोकॉल शिविर का शनिवार को समापन हो गया। शिविर का संचालन नोडल अधिकारी डॉ. नीलम पवार एवं डॉ. योगेश की देखरेख में हुआ। शिविर में आयुष योग सहायक सुनील देवी, अंजीत, सुमन दहिया, प्रीति, उषा रानी, निशा कौशिक, रेणु, निशा कल्याण, सीमा सैनी, कमल रंजन, स्वाति, मयंक आदि ने प्रतिभागियों को योग के विभिन्न आसन, प्राणायाम एवं ध्यान की विधियों का अभ्यास कराया गया। साथ ही योग के महत्व तथा स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली अपनाने को जागरूक किया। प्रशिक्षकों ने बताया कि नियमित योगाभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है तथा व्यक्ति तनावमुक्त और ऊर्जावान जीवन जी सकता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से योग को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करने का आह्वान किया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 14 जून 2026

रिलेशनशिप का नया ट्रेंड
डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड

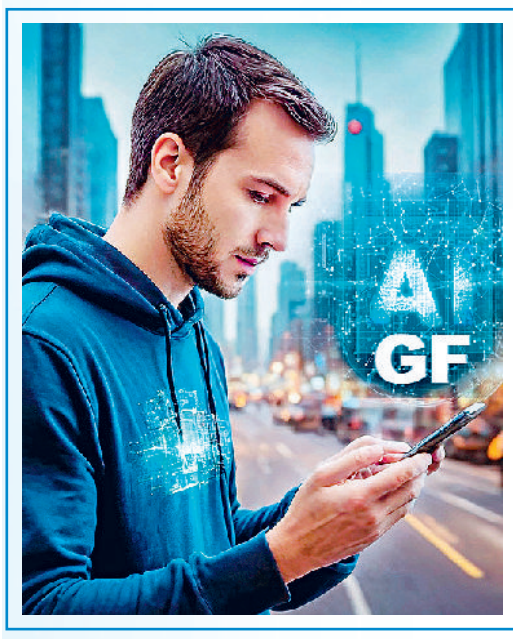

हाल के वर्षों में एआई ने अनेक प्रोफेशंस में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है। अब प्रोफेशंस से भी आगे बढ़कर रिलेशनशिप में भी इसका दखल बढ़ने लगा है। इसका प्रमाण है, रियल के बजाय डिजिटल पार्टनर बनाने का बढ़ता ट्रेंड। यह ट्रेंड क्या है, यह क्यों बढ़ रहा है और आने वाले समय में इसके किस तरह के असर हम सभी को देखने को मिल सकते हैं, इसका डिटेल्ड एनालिसिस।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

भले ही आज यह बात आपको थोड़ा असहज कर सकती है, लेकिन यह सच है कि रिलेशनशिप का नया ट्रेंड तेजी से सामने आ रहा है, वो है डिजिटल गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड। डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड (जीएफ/बीएफ) कोई साधारण ट्रेंड नहीं है, बल्कि इंसानी रिश्तों के ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव की शुरुआत है।

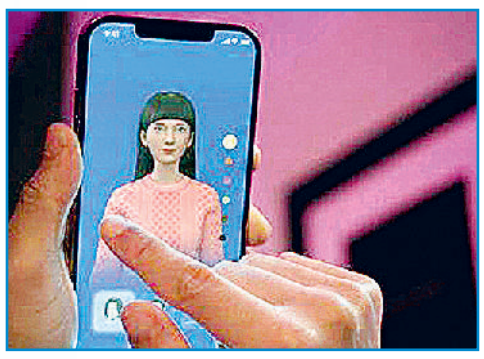

रियल पार्टनर जैसी फीलिंग

आज एआई आधारित एप्स और विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे रिपेलिका और करेक्टर एआई मौजूद हैं, जो यूजर के साथ उसी तरह रोमांटिक, भावनात्मक या निजी बातचीत करते हैं, जैसे ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड आपस में करते हैं। ये आपकी पसंद ही नहीं भावनाओं को भी समझते हैं, आपकी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं और पर्सनल पार्टनर जैसा अनुभव देते हैं।

करोड़ों लोग हैं एक्टिव

डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड कोई रेयर या एक्सेप्शनल फिनोमिना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अगर एआई कंपेनियनशिप एप्स के आंकड़ों को मानें तो इस समय दुनिया में 5 से 6 करोड़ जीएफ/बीएफ सक्रिय रूप में मौजूद हैं। पूरी दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो इनके साथ किसी न किसी रूप से चैटबॉट्स के जरिए जुड़ते हैं। इनमें सिर्फ रिपेलिका के ही 3-4 करोड़ यूजर हैं, जबकि करेक्टर एआई के 2 करोड़ सिर्फ मंथली एक्टिव यूजर हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया के 21 फीसदी वयस्क एआई कंपेनियनशिप का इस्तेमाल कर चुके हैं और 72 फीसदी किशोर कम से कम एक बार ऐसे एआई से बातचीत की है। मतलब यह कि अब यह कुछ थोड़े से लोगों का शौक या प्रयोग भर नहीं है बल्कि यह बड़ी जनसंख्या का न्यू नॉर्मल व्यवहार है।

अपने देश में भी बढ़ रहा ट्रेंड

भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। हालांकि भारत के अलग से सटीक आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इसका बढ़ता ट्रेंड साफ तौर पर देखा जा सकता है। और ऐसा हो भी क्यों न, आखिर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश है। भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल में हैं और इनमें 80 करोड़ से ज्यादा में इंटरनेट का इस्तेमाल होता है। अगर एआई एप्स डाउनलोड ग्रोथ 2023-24 को देखें, तो भारत में इसकी रफ्तार 1400 फीसदी रही है यानी, हाल के सालों में भारत में एआई एप्स को डाउनलोड करने की रफ्तार 14 गुना तक बढ़ी है। क्योंकि भारत में मोबाइल फोन के सबसे बड़े उपभोक्ता 18 से 30 साल के युवा हैं। इसलिए भी भारत में एआई कंपेनियनशिप की मांग अविश्वसनीय रफ्तार से बढ़ रही है। क्योंकि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाला यही वर्ग (18-30) सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर वर्ग है। इसके बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि भारत में यह सिलसिला अभी शुरुआती चलन में है, भले इसकी रफ्तार बहुत तेज हो।

इस ट्रेंड के बढ़ने की वजहें

सवाल है, आखिर इंसानों को डिजिटल जीएफ और बीएफ तक जाने की जरूरत ही क्यों पड़ी? यानी हम आखिर यहां पहुंचे क्यों और कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों में बढ़ता अकेलापन। शहरी जीवन, काम का दबाव, टूटते सामाजिक नेटवर्क और भावनात्मक सहारा ढूंढ़ते युवा। वास्तव में यही वजहें हैं, जिनके चलते पिछले कुछ सालों में ही डिजिटल जीएफ/बीएफ की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। असली रिश्तों में लगातार बढ़ती असहमति, समझौते और जिम्मेदारियां एआई रिश्तों की तरफ हमें मोड़ रही हैं, क्योंकि वहां इस तरह की दुश्वारियां या तो नहीं हैं या इतनी नहीं है कि परेशान करके रख दें। क्योंकि एआई रिश्ते 'कंट्रोल्ड' होते हैं और उनको संभालना आसान होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एआई अब इस कदर एडवांस हो चुका है कि वह लोगों को 'सोचने और समझने' का भी भ्रम पैदा कर रहा है।

रियल रिलेशन होंगे वीक

इस उभरते नए डिजिटल रिलेशन को लेकर गंभीर सवाल यह है कि अगर इस सिलसिले को जल्द रोका न गया, तो क्या होगा? भले ही अभी यह ट्रेंड रोमांचित कर रहा है, लेकिन सच है कि इससे हमारे जैविक रिश्ते आने वाले दिनों में बेहद कमजोर हो सकते हैं। अगर संबंध विशेषज्ञों की मानें तो यह सिलसिला इसी तरह बेकाबू आगे बढ़ता रहा तो असली रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगेंगी। हममें से ज्यादातर लोगों के रिश्तों के नाम एआई पार्टनर होंगे, क्योंकि एआई पार्टनर झगड़ा नहीं करते और हमेशा आपकी हां में हां मिलाते हैं। इससे असली रिश्ते जटिल लगने लगते हैं और एआई रिश्ते आकर्षक हो जाते हैं। जो लोग हर दिन एआई के साथ एक से दो घंटे के लिए संपर्क में रहते हैं, उन्हें एआई से लगाव हो जाता है। वे उसे अपने पार्टनर के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। यह वैसा ही है, जैसे सोशल मीडिया एडिक्शन। पर, यह उससे भी एक कदम आगे का एडिक्शन है, क्योंकि इससे हमारे न सिर्फ भावनात्मक रिश्ते पर चोट लग रही है बल्कि इसके कारण हमारे समाज का सदियों से मौजूद पारंपरिक ढांचा दरकने लगा है।

मेंटल हेल्थ पर बुरा असर

डिजिटल रिलेशन का असर सिर्फ भावनात्मक रिश्तों तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि बढ़ते जीएफ/बीएफ ट्रेंड के कारण हमारे युवाओं के मेंटल हेल्थ पर भी गंभीर असर पड़ता है, क्योंकि शुरुआत में ये डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड भले राहत देते हों, लेकिन जब आप लगातार इनके टच में रहते हैं या इनका इस्तेमाल करते हैं, तो ये न केवल आपको अकेलेपन के दलदल में खींच ले जाते हैं बल्कि आपको कई तरह की हताशाओं और निराशाओं से भी भर देते हैं। अकसर एआई कंपेनियनशिप के साथ जो लोग खुश होते हैं, उन्हें नजदीक के इंसानों से रिश्ते बनाने में बड़ी मुश्किल लगती है और अगर किसी तरह से इनके रिश्ते बन भी गए, तो उन्हें यह रिश्ते बहुत पसंद नहीं आते। *

बढ़ सकती हैं कई तरह की समस्याएं

डिजिटल जीएफ/बीएफ का बढ़ता ट्रेंड सचमुच में डरावना है। इससे आने वाले समय में कई समस्याएं सामने आ सकती हैं। इसके बढ़ने से शादी और परिवार की संस्था कमजोर होगी। कस्टम पार्टनर की आदत यानी हम जैसा साथी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में अपनी कल्पना के साथी की तलाश में रहने लगेंगे। अगर यह चलन इसी तरह तेजी से बढ़ता रहा, तो देश और दुनिया में अकेले रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी। कई विशेषज्ञों के मुताबिक तो अगले दो-तीन दशकों में अकेले रहने वाले लोग, साथ में रहने वाले लोगों से भी ज्यादा हो सकते हैं। इससे सामाजिक दूरी भी बढ़ेगी। यह ट्रेंड मानव समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही हमेशा जवान, खूबसूरत दिखने की चाहत रही है। इसे पाने के लिए नेचुरल तरीकों से लेकर, साइंस, दवाएं और अब एआई तक का यूज किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही खूबसूरती का कोई पर्मानेंट सॉल्यूशन हमें मिल जाएगा।

पर्मानेंट खूबसूरती की चाहत
जल्द मिल सकता है सॉल्यूशन

{ टेक्नोसाइंस / प्रतिमा अरोड़ा }

इंसानी खूबसूरती का क्या कोई स्थायी और सार्वभौमिक फार्मूला हो सकता है? 19वीं शताब्दी से ही विज्ञान इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा है। आधुनिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जेनेटिक्स और कॉस्मेटिक मेडिसिन का अब लगभग यह केंद्रीय विषय बन चुका है कि दुनिया भर के इंसानों के लिए एक सार्वभौमिक खूबसूरती का पैमाना क्या हो और इसे पूरी दुनिया के स्तर पर संभव कैसे बनाया जाए? यह सोच और यह खोज इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इंसान सदियों से सुंदर होने के उपाय खोजता रहा है। कभी प्राकृतिक नुस्खों से, कभी शल्य चिकित्सा से, कभी जीन एडिटिंग से, तो अब एआई आधारित तकनीकों से भी।

खूबसूरती की खोज की शुरुआत

19वीं सदी के अंत से ही वैज्ञानिक इंसान की स्थायी खूबसूरती का समाधान खोज रहे हैं। विशेषकर जब से शरीर रचना विज्ञान यानी एनाटॉमी और त्वचा विज्ञान यानी डर्मेटोलॉजी का व्यवस्थित विकास हुआ। तभी से विज्ञान कुछ बातों पर फोकस कर रहा है। जैसे-त्वचा की संरचना का विज्ञान क्या है और इसे हमेशा जवान कैसे बनाए रखा जा सकता है? आखिर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है और इसे कैसे रोका जा सकता है? हार्मोन और सौंदर्य के बीच क्या संबंध हैं, क्या हार्मोन में ही इंसानी सौंदर्य का रहस्य छिपा है? 20वीं सदी के मध्य में प्लास्टिक सर्जरी के बाद कॉस्मेटिक सर्जरी लगभग चमत्कार की तरह उभरकर सामने आई। इस दौर में अनेक जैविक शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि त्वचा का रंग, बालों की बनावट, चेहरे की आकृति और झुर्रियां इन सबका बड़ा हिस्सा जीन द्वारा नियंत्रित होता है। अतः जीन नियंत्रण का विज्ञान समझ लिया जाए तो एक तरह से खूबसूरती पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सौंदर्य का केंद्र जेनेटिक्स

साल 2003 में ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट लांच हुआ और यह विज्ञान के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इससे यह समझ में आया कि मानव शरीर में मौजूद हजारों जीन, हमारे शरीर की अलग-अलग संरचनाओं और गुणों के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध से पता चला त्वचा की मोटाई का कारण क्या है? कोलेजन का उत्पादन कैसे होता है? उम्र बढ़ने की गति क्या होती है? बाल झड़ते क्यों हैं? केंद्रीय रूप से इन सबके पीछे विशिष्ट कारण सिर्फ जीन हैं। आज वैज्ञानिक जीनों की पहचान करके एजिंग के रहस्य का पर्दाफाश करने में लगे हैं। इस शोध और लगातार कोशिश का निष्कर्ष यह है कि सैद्धांतिक रूप से जीन स्तर पर बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है।

प्रभावी है कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी

हालांकि कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी अभी अस्थायी ही है। लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य विज्ञान का सबसे विकसित क्षेत्र है और एस्थेटिक मेडिसिन को भविष्य इंसान की खूबसूरती को स्थायी रूप देने में सक्षम माना जा रहा है। आज इसी विज्ञान के चलते-बोटोक्स, डर्मल फिलर्स, लेजर स्किन रिसर्फेसिंग तथा केमिकल पिल्स जैसी प्रक्रियाओं से लोग अपनी झुर्रियां कम कर रहे हैं। त्वचा को चिकनी, मुलायम और टाइट रख पाने में सफल हो रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि चेहरे को पसंदीदा आकृति देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि अभी यह 100 फीसदी संभव नहीं है, लेकिन हर गुजरते साल के साथ यह पहले से बेहतर होती जा रही है। इस बात का सबूत है कि बहुत जल्द इंसानी खूबसूरती का स्थायी समाधान बनकर कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी सामने आएगा।

जीन एडिटिंग में है भविष्य

साल 2012 के बाद जीन एडिटिंग तकनीक, जिसे सीआरआईएसपीआर-सीएएस-9 कहा जाता है, ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी। इस तकनीक के जरिए वैज्ञानिक खराब जीन काट सकते हैं, नए जीन जोड़ सकते हैं, जीन के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। ये सब सहूलियतें उम्मीद जता रही हैं कि भविष्य में इंसान गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, थैलेसीमिया और जेनेटिक डिसऑर्डर से पार पाने में सफल रहेगा। एजिंग के प्रभाव को धीमा किया जा सकता है, बालों के झड़ने को रोका जा सकता है, त्वचा को युवा बनाए रखने की स्थायी तरकीब ढूंढ़ी जा सकती है। लब्बोलुआब यह कि सिर्फ सुंदरता बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए, जीन एडिटिंग की कवायद लगातार जारी है।

एआई और पर्सनलाइज्ड ब्यूटी

एआई आधारित सिस्टम के जरिए अब हम यह जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति की त्वचा कितनी बूढ़ी है और वह किस रफ्तार से बूढ़ी हो रही है? वास्तव में इस सारी जानकारी को पर्सनलाइज्ड ब्यूटी प्लान के नाम से जानते हैं और इस प्लान के अस्तित्व में आने के बाद अब अलग-अलग इंसानों का स्वतंत्र रूप से खूबसूरत और स्वस्थ होना ज्यादा आसान और गारंटीड हुआ है। वैज्ञानिकों को भरोसा है कि अब खूबसूरती का स्थायी समाधान हासिल करने में बहुत देर नहीं है। *

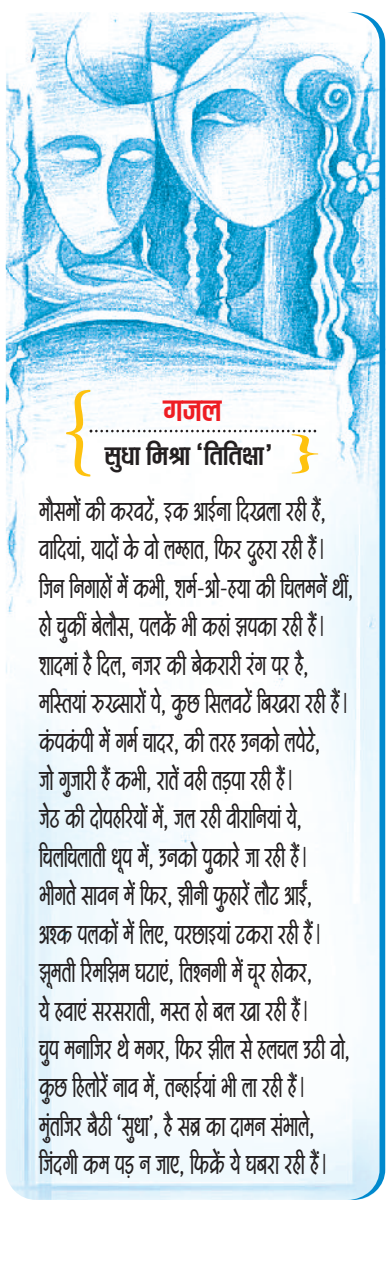

{ गजल / सुधा मिश्रा 'तितिक्षा' }

मौसमों की करवटें, इक आईना दिखला रही हैं,
वादियां, यादों के वो लम्हात, फिर दुहरा रही हैं।
जिन निगाहों में कभी, शर्म-ओ-हया की थिलमनें थीं,
हो चुकीं बेलौस, पलकें भी कहां झपका रही हैं।
शादमां है दिल, नजर की बेकरारी रंग पर है,
मस्तियां रुख्सारों पे, कुछ सिलवटें बिखरा रही हैं।
कंपकंपी में गर्म चादर, की तरह उनको लपेटे,
जो गुजारी हैं कभी, रातें वही तड़पा रही हैं।
जेठ की दोपहरियों में, जल रही वीरानियां ये,
चिलचिलाती धूप में, उनको पुकारे जा रही हैं।
भीगते सावन में फिर, ज़ीनी फुहारें लौट आईं,
अश्क पलकों में लिए, परछाइयां टकरा रही हैं।
झूमती रिमझिम घटाएं, तिश्नगी में चूर होकर,
ये ख्वाएं सरसराती, मस्त हो बल खा रही हैं।
चुप मनाजिर थे मगर, फिर झील से हलचल उठी वो,
कुछ हिलोरें नाव में, तन्हाईयां भी ला रही हैं।
मुंतजिर बैठी 'सुधा', है सब्र का दामन संभाले,
जिंदगी कम पड़ न जाए, फिक्रें ये घबरा रही हैं।

{ स्मरण / अरविंद कुमार }

सभी करते थे बाबू जी का सम्मान

हिंदी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत जी का यह जन्मशती वर्ष है। उनकी कहानियों और उपन्यासों से तो अधिकांश साहित्यप्रेमी परिचित हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और स्वभाव में उपस्थित सदाशयता, विनम्रता के बारे में लोग कम ही जानते हैं। उनके सुपुत्र अरविंद कुमार ने अपने पिता से जुड़ी कुछ भावभीनी स्मृतियां **हरिभूमि** से साझा कीं। दुर्भाग्य से कुछ माह पूर्व अरविंद जी का निधन हो गया।

बाबू जी (अमरकांत जी) सपरिवार लखनऊ से जब करेलाबाग कॉलोनी (इलाहाबाद अब प्रयागराज) में आकर रहने लगे तो वहां एक अलग माहौल देखने को मिला। इस कॉलोनी में पांच सौ चार क्वार्टर्स हुआ करते थे, जिसमें हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी रहा करते। वहां बहुत ही सुखद सामाजिक रिश्तों का ताना-बाना, सौहार्दपूर्ण वातावरण देखने को मिला। हर तरफ हरियाली एवं सांस्कृतिक परिवेश का माहौल था। हमारे क्वार्टर के ठीक सामने एक बड़ा अमलतास का पेड़ था। गर्मियों में इसके फूल खिलते तो ऐसा महसूस होता था, जैसे पेड़ पीले गहनों से सजा हुआ है, एक बार नामवर सिंह जी दो-चार लोगों के साथ आए तो इस स्थान ने उन्हें अभिभूत कर दिया, वे बोले, 'अमरकांत जी हम लोग इसी मनोरम जगह पर बैठेंगे। सुबह का समय, यहां की अनुभूति कैसी होती है, महसूस किया जाए।' दरअसल, पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन, उनका कलरव मोहक लगता। इसीलिए आने वाले लोगों को यह स्थान मनोरम लगता।

कॉलोनी के बाहर की एक सड़क (नूर उल्लाह रोड, जो स्टेशन से सीधी करेली गांव तक जाती) पर मिस्टर रफी अहमद नाम के व्यक्ति का प्रेस एवं पेपर कटिंग मशीन लगी थी। इस स्थान पर रोजाना दो खेल शतरंज एवं कैरम सायं सात बजे से रात्रि बारह बजे तक नियम से खेला जाता। रफी साहब का बाबू जी से बहुत अच्छा संबंध था। बाबू जी को भी उक्त दोनों खेल पसंद थे। शनिवार के दिन अकसर वहां उनका इंतजार रहता। बगल के मोहल्ला रसूलपुर से भी शतरंज और कैरम में रुचि रखने वाले कुछ लोग आते, जिसमें दो नाम खासतौर पर मुझे याद हैं एक बहार आलम, जो पेशे से वकील, साहित्य कला में भी दिलचस्पी रखते थे। और उनके छोटे भाई नन्हे पहलवान भी उनके साथ आया करते थे। एक रोज की बात है, मां ने मुझसे कहा, 'रात अधिक हो गई है। रफी अहमद के यहां जाकर देखो बाबू जी अभी आए क्यों नहीं?' मैं कुछ ही समय पश्चात वहां पहुंच गया। खेल में बड़ी खामोशी थी। शतरंज की अंतिम बाजी पर लोगों की निगाहें गड़ी हुई थीं। कई शोहरतमंद गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में खेल हो रहा था। उर्दू अनुवादक हुनर साहब, स्थानीय विधायक हबीब अहमद आपस में बाजी लगा बैठे थे। बाबू जी की दूसरी तरफ खिलाड़ी बहार आलम थे। पंद्रह मिनट का समय लगा, बाजी बाबू जी ने अपने पक्ष में कर ली। सभी बाबू जी को बधाई देने लगे। पर वे बहार आलम के खेल की सराहना करते जा रहे थे, 'बहुत अच्छा खेला आपने।' बाबूजी का स्वभाव ऐसा ही था, उनमें दंभ जरा भी नहीं था।

बाबूजी से जुड़ी एक और स्मृति याद आ रही है। अक्टूबर 1987 का दिन, वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। वे मेटाबॉलिक बोन डिजीज से ग्रसित हो गए। उन्हें स्पाइनल कॉर्ड में इंफेक्शन हो गया था। प्रारंभ में कई डॉक्टरों से संपर्क किया गया, डॉक्टरों ने जॉगिंग और एक्सरसाइज करने की सलाह दी। उन्हें पेनकिलर के सहारे मुक्त कर दिया गया। समस्या यह हो गई कि उन्हें कोई भी खान-पान की चीज अच्छी नहीं लग रही थी और उनके बैक बोन में असहनीय दर्द था। मेडिकल कॉलेज के हड्डी के एक्सपर्ट डॉक्टरों ने कहा,'घबराने की बात नहीं है उम्र का तकाजा है।' जबकि ऐसी भी उम्र नहीं थी कि उस पर दोष मढ़ा जाए। बहरहाल, वे घर आ गए। मगर समस्या जस की तस बनी रही।

वे उन दिनों महिलाओं की पत्रिका 'मनोरमा' का संपादन कर रहे थे, किंतु स्वास्थ्य की वजह से असमर्थ हो गए थे। इसकी जानकारी डॉ. शांति चौधरी जी को हुई तो वे भागे-भागे घर पर आईं और पूरी जानकारी ली। उन्होंने अगले दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में वीआईपी वार्ड बुक करवाया। सभी चेकअप हुए। जानकारी मिली कि बाबू जी का हीमोग्लोबिन चार प्रतिशत पर आ गया है, जोकि बहुत ही चिंताजनक था। नामी विशेषज्ञ डॉक्टर ने देखा। बाबू जी दो दिन अस्पताल में रहकर वापस घर आ गए। शांति चौधरी जी, बाबू जी को पिता तुल्य मानती थीं। हम लोगों का उनसे बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है। वह 'मनोरमा' से विशेष कार्याधिकारी के रूप में जुड़ी थीं और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में पीआरओ के पद पर थीं।

कुछ दिनों तक जब बाबू जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तो चिंता हुई। तभी उन्हें देखने के लिए एस. के. दुबे आए जो टाइम्स ऑफ इंडिया के ब्यूरो चीफ थे। उन्होंने बताया डॉ. आर. सी. गुप्ता ऑस्ट्रेलिया से आ गए हैं, एक बार उन्हें बाबू जी को दिखाया जाएगा। उस समय रात्रि के आठ बजे हुए थे। लेकिन मुझे दूसरे दिन पर न टालकर रात्रि में ही ले जाना उचित लगा।

क्लीनिक बंद होने का समय रात्रि नौ बजे तक था। हम लोग पौने नौ बजे अस्पताल पहुंच गए। काउंटर बंद हो रहा था। डॉक्टर के असिस्टेंट डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि आप फीस जल्दी जमा कर दें, डॉ. साहब उठने वाले हैं। तभी डॉ. आर. सी. गुप्ता हम लोगों के समीप आए। उनकी पोशाक, पैर में खड़ाऊ और खद्दर का कुर्ता-पाजामा। पूछा, 'इन्हें क्या हो गया?' मैंने सभी बातें बताईं। उन्होंने असिस्टेंट डॉ. सिंह से कहा कि उस जगह का एक्स-रे करें जहां दर्द है। मैंने बताया प्रेस में जॉब करते हैं। फिर उनका सवाल था खड़े होकर काम करते हैं या बैठकर? मैंने कहा, 'बैठकर ही करते हैं।'

डॉक्टर गुप्ता ने पूछा, 'प्रेस कहां पर है?' जब मैंने प्रेस का नाम बताया, तो बोले, 'अरे यह प्रेस तो बहुत बड़ा है। यहां से तो पांच-छह मशहूर पत्रिकाएं निकलती हैं माया, मनोरमा, सत्यकथा, मनोहर कहानियां, प्रोब इंडिया। मनोरमा के संपादक तुम्हारे पिता के नाम वाले ही हैं, उनका नाम अमरकांत है, मगर वह बड़े राइटर हैं।'

मैंने जब उनसे कहा कि वे यही हैं। इस पर पहले तो डॉक्टर साहब मुझे कुछ सेकेंड एकटक देखते रहे फिर उठकर एक्स-रे रूम में गए। कुछ सेकेंड में डॉक्टर ए. के. सिंह जी बाहर आए और रसीद काउंटर रूम में गए। मेरे जमा किए गए पैसे लाकर विनम्रतापूर्वक मुझे दे दिए। बोले, 'डॉक्टर साहब ने पैसे वापस करने के लिए कहा है।' डॉक्टर आर. सी. गुप्ता पंद्रह-बीस मिनट में अपने चैंबर में वापस आ गए, बोले, 'जो मुझे शक था वही निकला।' उन्होंने अपने क्लीनिक से पूरे एक माह की दवा मुझे दी। मैं पैसे निकालने लगा, तो मना कर दिया, फिर बोले 'इनका पूरा इलाज मैं करूंगा। आपको कोई तनाव नहीं लेना है। मैं आपके साथ हूं। मुझे अमरकांत जी की सेवा करने का मौका मिला, मेरा सौभाग्य है। मैं कमिश्नर, मंत्री के घर नहीं जाता हूं, लेकिन मैं आपके घर नियमित आकर इनको देखूंगा। अस्पताल आने की जरूरत नहीं है, घर पर ही सभी इंतजाम करवा दूंगा।' उन्होंने सच में ऐसा ही किया। घर पर ही बाबू जी को ट्रैक्शन लगवाया, साथ ही कमर से लेकर छाती तक प्लास्टर भी करवाया। छह माह तक वे बाबू जी को देखने घर नियमित आते रहे, न कभी फीस लिया और दवा, इंजेक्शन के खर्च से भी मुक्त रखा। बाबू जी छह माह ट्रैक्शन, प्लास्टर और दवा पर रहे, सीधे लेटे रहते। मर्ज जरूर दूर हो गया किंतु स्पाइनल कॉर्ड डिफार्म हो गया। बाबू जी को कष्ट तो बहुत रहा लेकिन डॉक्टर आर. सी. गुप्ता जैसे लोगों का उनके प्रति आदर और प्रेम देखकर मैं अभिभूत हो जाता था। बाबू जी इतने बड़े लेखक-संपादक थे लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना सरल रहता कि हर कोई उनका सम्मान करता था। *

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

भारत के उत्तरपूर्व में छोटा सा प्रदेश है- सिक्किम। इसका एक तिहाई हिस्सा बायोस्फीयर रिजर्व और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है, जहां दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट कंचनजंगा स्थित है। यहां की संस्कृति मिली-जुली है। खाना अनोखा है, नजारे शानदार, सड़कें साफ-सुथरी और माहौल बहुत शांत है। कुछ समय पूर्व ही सिक्किम की यात्रा से लौटीं लेखिका इसकी खूबसूरती बयां कर रही हैं अपनी जुबानी।

जन्नत से कम नहीं सिक्किम

हालांकि देश के अलग-अलग हिस्से में यात्राएं तो मैंने कई की हैं। लेकिन अब तक देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में से कहीं जाना नहीं हुआ था। इसलिए जिस दिन सिक्किम यात्रा का प्लान फाइनल हुआ, उस दिन से मन में एक अलग-सा उल्लास भर गया था। दिल्ली से सिक्किम जाने के दो विकल्प थे- ट्रेन या हवाई जहाज। हमारे समूह ने ट्रेन से जाने का निर्णय लिया। दिल्ली से पहले पश्चिम बंगाल के नई जलपाईगुड़ी और फिर वहां से प्राइवेट कैब लेकर गंगटोक। यह यात्रा काफी दिलचस्प रही। पहाड़, जंगल, संग-संग बहती तीस्ता नदी और छोटे-छोटे गांव, कस्बों को पार करते हुए आखिरकार हम गंगटोक पहुंचे।

गंगटोक ने मोह लिया मन

हिमालय की गोद में बसा गंगटोक एक ऐसा स्थान है, जहां बादल पहाड़ों के साथ अठखेलियां करते हैं, तो नदियां अपनी ही धुन में गीत गाती बहती हैं। यह नजारा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जैसे ही सूरज की किरणें बर्फ से ढंकी चोटियों को चूमती हैं, नीचे हरी-भरी घाटियों पर सुनहरी आभा बिखर जाती है। अपने रंग-बिरंगे बौद्ध मठों, बाजारों और मोहक नजारों से सजा गंगटोक बेमिसाल है। सिक्किम की यह राजधानी दुनिया के कुछ सबसे शानदार बौद्ध मठों का घर है, जिसमें सबसे मशहूर मठ है रुमटेक मठ। गंगटोक से करीब 21 किमी दूर स्थित इस मठ के शांत माहौल में आप रम जाएंगे। इसके अलावा, बीच शहर में स्थित गोनजैंग मठ भी कम मनमोहक नहीं है। शहर के अन्य आकर्षणों में बानझाकरी वॉटरफॉल, ताशी व्यू प्वाइंट, गणेश टोक, हनुमान टोक, गैंगटोक रोप-वे राइड, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क और ऑर्किडेरियम मुख्य हैं।

टेमी टी गार्डन से कंचनगंजा के दीदार

गंगटोक पहुंचने के दूसरे दिन, सुबह नाश्ता करके हम सभी पश्चिम सिक्किम के पेल्लिंग के लिए रवाना हुए, जो करीब 130 किमी. दूर था। हमारा पहला पड़ाव टेमी चाय बागान था। यह सिक्किम का एकमात्र टी गार्डन है, जहां ऑर्गेनिक चाय की पैदावार होती है। घुमावदार रास्तों से जब हमने इस गार्डन में प्रवेश किया, तो वहां की खूबसूरत छटा देखते ही रह गए। मौसम साफ था, तो वहां से कंचनजंगा चोटी के दीदार भी हुए। कुछ समय बिताने के पश्चात हम आगे बढ़े। शाम करीब 4.15 बजे हम पेल्लिंग स्थित अपने होम स्टे पर पहुंच गए। वहां सभी का स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार, स्वागत हुआ। लेकिन तब तक मौसम का रंग बदल चुका था। रिमझिम शुरू हो गई। अगली सुबह भी बारिश थमी नहीं। लेकिन नौ बजते-बजते आसमान साफ होने लगा। हम निकल पड़े पेल्लिंग की ओर।

पश्चिमी सिक्किम का नगीना-पेल्लिंग

पेल्लिंग एक शांत कस्बा है, जो करीब 7,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग सरीखा है। हरी-भरी घाटियों, झर-झर गिरते झरनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ यह इलाका सिक्किम के मूल स्वरूप को बेहद खूबसूरती से समेटे हुए है। यहां अकसर कोहरा और बादल छाए रहते हैं, जो इसकी अलौकिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग, बर्ड वॉचिंग करने के अलावा, प्राचीन मठ, गोंपा और स्तूपों से लेकर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं पवित्र खेचेओपालरी झील की सैर कर सकते हैं। हमने कुछ चुनिंदा स्थानों पर जाना तय किया।

पेमायंगत्से मठः 17वीं सदी में स्थापित, सिक्किम के सबसे पुराने मठों में से एक पेमायंगत्से मठ में दुर्लभ कलाकृतियां देखने को मिलेंगे।

खेचेओपालरी झीलः बौद्ध और हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाने वाले पवित्र खेचेओपालरी झील में एक अलग ही अनुभव होता है। मान्यता है कि मनोकामना पूर्ति करने वाली इस झील के शांत जल को गुरु पद्मसिन और देवी तारा का आशीर्वाद प्राप्त है।

सिडकियोंग बर्ड पार्कः पक्षी प्रेमियों के लिए पेल्लिंग और रबदंत्से के बीच एक खास आकर्षण का स्थल है- सिडकियोंग बर्ड पार्क, जो हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का घर है।

रिवर ऑरेंज गार्डनः रिंबी नदी के किनारे स्थित इस गार्डन में संतरे के बेशुमार पेड़ लगे हैं। ऑरेंज गार्डन के अंदर एक विलेज होमस्टे, कुछ दुकानें और रेस्टोरेंट भी हैं।

ग्लास स्काईवॉकः ग्लास स्काईवॉक पेल्लिंग के बेहद शानदार अनुभवों में से एक है। देश के इस पहले 'ग्लास स्काईवॉक' के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता, जो समुद्रतल से लगभग 7200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जब आप इसके पारदर्शी शीशे के फर्श पर कदम रखते हैं, तो हवा में चलने जैसा एहसास होता है। नीचे घाटी को देखते हुए रोमांचक अनुभव होने के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी होती है। लेकिन आस-पास के हरे-भरे नजारे और पूर्वी हिमालय के शानदार दृश्य मन को सुकून देते हैं। स्काईवॉक के समीप ही चार भुजाओं वाले चेनरेजिंग (अवलोकितेश्वर) की 137 फीट ऊंची मूर्ति भी स्थित है।

नामची में चार धाम के दिव्य दर्शन

पेल्लिंग में दो दिन बिताने के उपरांत हमारा अगला डेस्टिनेशन था, सिक्किम के दक्षिण में स्थित नामची। इसे राज्य का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र कहते हैं। यहां हमने 'चार धाम' मंदिर के दर्शन किए। असल में यहां भारत के चार पवित्र मंदिरों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। मंदिर परिसर में भगवान शिव की 108 फुट ऊंची प्रतिमा मुख्य आकर्षण का केंद्र है। समीप में एक भव्य साईं मंदिर भी है।

रावंगला का अलौकिक बुद्ध पार्क

नामची से जब हम रावंगला की ओर बढ़े, तो वहां हमें एक भव्य बुद्ध पार्क के दर्शन हुए, जिसे 'तथागत त्सल' के नाम से भी जाना जाता है। यहां शाक्यमुनि बुद्ध की 130 फुट ऊंची, अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है।

मनमोहक त्सोंगो झील

गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूर (गंगटोक-नाथुला हाइवे), 12,313 फीट की ऊंचाई पर स्थित त्सोंगो झील एक हिमनद झील है, जो अपने शानदार प्राकृतिक नजारों और गहरे सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है। इसकी सतह

का रंग मौसम के अनुसार, बदलता रहता है। जैसे ही हम इसके करीब पहुंचे, वहां का नजारा कल्पना से भी परे था। चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां और हरे-भरे घास के मैदान। यह किसी परी कथा से सीधे निकला हुआ दृश्य लग रहा था। हमने यहां न सिर्फ बर्फ में मस्ती, याक की सवारी की, बल्कि दुनिया के सबसे ऊंचे रोप-वे की रोमांचक यात्रा भी की।

लाचुंग की यादगार यात्रा

हमारा अगला पड़ाव अब सिक्किम का उत्तरी भाग था, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा और अधिक रिमोट क्षेत्र है। गंगटोक से लाचुंग की दूरी करीब 102 किमी. है। सबसे पहले हमें मिला, सेवन सिस्टर्स वॉटरफॉल्स। इस झरने में सात सीढ़ियां या चरण हैं, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। यहां कुछ देर ठहरने के पश्चात हम आगे बढ़े, तो अगला पड़ाव लाचुंग में प्रवेश का चेक प्वाइंट था। लाचुंग में हमने रात में होटल में विश्राम किया और अगले दिन सुबह-सुबह युमथांग घाटी और जीरो प्वाइंट के लिए निकले।

परीलोक जैसा युमथांग घाटी

11,800 फीट से ज्यादा की ऊंचाई पर बसा युमथांग घाटी किसी परीलोक जैसा लगा। अल्पाइन घास के सुंदर मैदान, चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां, गर्म पानी के झरने और साथ में बहती लाचुंग नदी। इसे फूलों की घाटी भी कहते हैं। यहां खासकर रोडोडेंड्रोन के फूल खिलते हैं, जो वैली को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों से रंग देते हैं।

धरती का वंडरलैंड जीरो प्वाइंट

युमथांग घाटी के सर्पीले रास्तों से गुजरते हुए हमारा साक्षात्कार धरती पर एक अलग ही दुनिया से होता है, जिसे 'जीरो प्वाइंट' (या युमेसमडोंग) कहते हैं। उत्तरी सिक्किम में 15,300 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा के पास स्थित यह एक सफेद वंडरलैंड है। यहां ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आपको नीचे से ही पोर्टेबल ऑक्सीजन कैन लेकर आना होता है। जीरो प्वाइंट पर सिर्फ भारतीय सैलानी ही आ सकते हैं। उन्हें सिक्किम टूरिज्म डिपार्टमेंट से प्रोटेक्टेड एरिया परमिट की जरूरत पड़ती है, जो रजिस्टर्ड टूर ऑपरेटर के जरिए एडवांस में लेना होता है। *

कब जाएं : सिक्किम जाने का बेस्ट टाइम है मार्च से मई का महीना। इसके अलावा अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक यहां जा सकते हैं। यूं कहें कि मानसून से पहले यहां कभी भी जा सकते हैं।

कैसे जाएं : आमतौर पर सैलानी पश्चिम बंगाल के बागडोगरा तक हवाई यात्रा करते हैं और वहां से कैब के जरिए गंगटोक जाते हैं। आगे की यात्रा भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टूर ऑपरेटर के कैब या टैक्सी से करते हैं। बागडोगरा के अलावा, गंगटोक से 35 किमी दूर स्पेशल पाकयोंग एयरपोर्ट भी है। ट्रेन से आप सिलिगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी तक पहुंच सकते हैं और वहां से कैब से गंगटोक जा सकते हैं।

परफ्यूम-डिओड्रेंट से मिले फ्रेश फील

सीजनल ट्रेंड / विवेक कुमार

गर्मी के मौसम में युवाओं की लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। उनके ड्रेस कलर हल्के हो जाते हैं। फुटवियर कंफर्टेबल और पसीना सोखने वाले पहनने लगते हैं। स्किन केयर प्रोडक्ट्स की संख्या बढ़ जाती है और इन सब चीजों के साथ ही शामिल हो जाता है डिओड्रेंट और परफ्यूम।

बढ़ा है ट्रेंडः एक जमाना था, जब केवल खास मौकों पर ही परफ्यूम, डिओड्रेंट आदि का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन आज के युवाओं की डेली लाइफस्टाइल के लिए ये जरूरी चीजें बन गई हैं, क्योंकि अब खुशबू केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का भी हिस्सा है। इसलिए कॉलेज से लेकर सोशल गेदरिंग और दफ्तर तक में परफ्यूम, डिओड्रेंट का चलन बहुत बढ़ गया है।

गर्मियों में इसलिए भी है जरूरीः गर्मियों में शरीर से पसीना बहुत निकलता है। इस कारण शरीर में बैक्टीरिया तेजी से सक्रिय होते हैं और शरीर से दुर्गंध आने लगती है। यंगस्टर्स सबसे ज्यादा भागदौड़ करते हैं और बहुत सारे लोगों से मिलते-जुलते हैं। ऐसे में शरीर से अच्छी खुशबू आना और फ्रेश फील करना, जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में डिओड्रेंट और परफ्यूम युवाओं के लिए सबसे जरूरी एसेसरीज बन जाती हैं।

बदल रही है च्वॉइसः फ्रेगरेंस की बात करें तो पहले के जमाने में लोग सिट्रस, एक्वा, मिंट, फ्लोरल नोट्स वाले परफ्यूम इस्तेमाल किया करते थे। जबकि लड़कियां बॉडी मिस्ट और हल्के फ्रूटी परफ्यूम पसंद करती थीं। लेकिन आजकल

स्पोर्टी और मस्क फ्रेगरेंस का चलन बढ़ा है।

बढ़ी है डिमांड-सप्लाईः कुछ दशक पहले के युवाओं के मुकाबले आज के युवाओं की अर्निंग और परचेजिंग पावर बढ़ी है। जो टीनएजर अपने मम्मी-पापा पर पॉकेटमनी के लिए डिपेंड हैं, उनकी पॉकेटमनी भी पहले से काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस कारण भी बाजार में परफ्यूम और डिओड्रेंट जैसी एसेसरीज की भरमार हो गई है। अब केवल बड़े ब्रांड ही नहीं बल्कि कई भारतीय स्टार्टअप भी युवाओं को ध्यान में रखकर नए-नए प्रोडक्ट्स लांच कर रहे हैं। मसलन, पॉकेट परफ्यूम, मिनी रोल-ऑन, एल्कोहल फ्री डिओड्रेंट आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। *

सिने ट्रेंड
डी. जे. नंदन

फिल्मों में कितना इफेक्टिव है स्पीड-एडवेंचर का जादू

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी जी रहे लोग, खासकर यंगस्टर्स, मनोरंजन के लिए देखी जाने वाली फिल्मों में भी 'स्पीड' यानी तेजी से भागती कहानी पसंद करते हैं। हालांकि कई फिल्में इसकी अपवाद भी रही हैं। फिल्मों में स्पीड और एडवेंचर के सक्सेस से रिलेशन पर एक नजर।

आज का दर्शक ठहराव नहीं, स्पीड चाहता है।' यह धारणा इन दिनों फिल्म जगत में किसी सूत्रवाक्य की तरह हर तरफ गूंज रही है। कहा जा रहा है कि मोबाइल स्क्रीन, रील कल्चर और लगातार बदलती डिजिटल दुनिया ने युवाओं को इतना धैर्यहीन बना दिया है कि अब वह उन्हीं फिल्मों को देख सकते हैं या देखते हैं, जो शुरुआती 10 मिनटों में ही दर्शकों को खुद से जोड़ ले। हर कुछ देर में चौकाएं और कहानी में बिना कोई ठहराव आए, वह लगातार आगे बढ़ती रहे। इसके लिए फिल्मों में तेज एडिटिंग, छोटे दृश्य, लगातार ट्विस्ट और ऊंची भावनात्मक उत्तेजना का चलन बढ़ा है। कुल मिलाकर यह 'हाई इंगेजिंग' ड्रामा का दौर है।

दर्शकों को चाहिए अटैचमेंट हुकः इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का युवा दर्शक शुरू से ही फिल्मों में 'अटैचमेंट हुक' चाहता है। उसमें यह आदत हाल के सालों में विकसित हुई रील कल्चर और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ही लगाई है, क्योंकि आज के युवा आमतौर पर दिन के तीन से चार घंटे, छोटे वीडियो और तेज रफ्तार सूचनाओं के घेरे में रहते हैं। लगातार बदलती विजुअल एक्साइटमेंट के बीच रहने के कारण उनके स्वभाव में तेजी को लेकर पसंदगी बढ़ी है। बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में भी कुछ इस तरह से हाइप बन गई है कि अगर कहानी देर तक एक ही वातावरण में टिकी रही तो दर्शकों, विशेषकर युवाओं का ध्यान उचट जाएगा और वो फिल्म को नकारा देंगे।

इन फिल्मों ने सेट किया नया ट्रेंडः अब बॉलीवुड ट्रेंड के जानकारों और फिल्म मेकर्स के लिए सफलता का अलिखित सिद्धांत बन चुका है कि युवा दर्शकों को फिल्मों में शुरू से ही बांधकर रखो। किसी बड़े हादसे के जरिए, किसी उलझाऊ रहस्य के जरिए या अंधाधुंध हिंसा अथवा विस्फोट के जरिए। बहरहाल, यह राय बनाने या यूं कहें कि यह ट्रेंड सेट करने में हाल के वर्षों में आई 'जवान' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों की बड़ी भूमिका है। क्योंकि इन फिल्मों में तेज रफ्तारी का सिद्धांत ही सबसे ज्यादा मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इन फिल्मों की सफलता और फिर हाल में आई 'धुरंधर-1', 'धुरंधर-2', की सफलता ने ही तेज रफ्तार वाली फिल्मों के लिए माहौल बनाया है। ट्विस्ट और टर्न्स से भरी इन इन सभी फिल्मों में बड़ी तेजी से थोड़ी-थोड़ी देर में दृश्य बदलते हैं।

इमोशनल इंगेजिंग फिल्में भी हुईं सफलः फिल्मों की स्पीड को लेकर सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच आज का युवा दर्शक सिर्फ तेज रफ्तार फिल्मों का दीवाना है? अगर ऐसा ही होता तो भला '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी धीमी रफ्तार वाली फिल्मों को युवाओं ने इतना क्यों पसंद किया? दरअसल, बहस सिर्फ स्पीड की नहीं इंगेजमेंट की है। आज का युवा दर्शक वाकई कहानी में अनावश्यक खिंचाव नहीं चाहता, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह भावनात्मक गहराई को समझता नहीं या उसे पसंद नहीं करता। जब भी ऐसी फिल्में आती हैं, जिनमें भावनात्मक गहराई मौजूद होती है, तो फिर वह उन्हें निश्चित रूप से पसंद करता है। '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी फिल्मों का कथानक भी महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का था, फिर भी ये दोनों फिल्में खासकर युवा दर्शकों द्वारा खूब पसंद की गईं, तो इसका मतलब यह है कि युवा दर्शक सिर्फ तेज स्पीड और हाई इंगेजिंग फिल्मों को ही पसंद नहीं करते बल्कि उन सभी फिल्मों को पसंद करता है, जो उनकी भावनाओं को स्पर्श करती हैं। आज के युवा दर्शक अच्छी कहानी पसंद करते हैं, चाहे वह तेज हो या फिर चाहे धीमी ही क्यों न हो।

पुरानी फिल्मों में नहीं था स्पीड का प्रेशरः पुराने जमाने की फिल्मों के पात्र आपस में देर तक बातचीत करते थे। खामोशी होती थी, तो वह भी कई बार इतनी लंबी होती थी कि दर्शक खुद खामोशी महसूस करने लगता था। इस तरह अगर इस स्पीड के पैमाने पर पुरानी फिल्मों को कसें तो कोई फिल्म ही नहीं हिट होनी चाहिए थी। लेकिन हम जानते हैं कि फिल्मों की सफलता की दर आज के मुकाबले पहले कहीं ज्यादा थी। यह अलग बात है कि आज के मुकाबले फिल्मों की कमाई बहुत कम थी। वास्तव में पेस (स्पीड) इन दिनों सच्चाई से कहीं ज्यादा एक फैशन की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि सच यह है कि आज के दर्शक भी गहरे और इंटेंस कम रफ्तार के दृश्य भी खूब पसंद करते हैं।

स्पीड के अलावा भी हैं कई फैक्टर्सः आज का युवा दर्शक सिर्फ धीमेपन से बोर नहीं होता बल्कि बेसिर पैर के फिल्म के खिंचाव, बिना किसी वजह फिल्म को वल्गर बनाने की कोशिश और जबर्दस्ती फिल्मों में ठूंस दिए गए आइटम सॉन्ग जैसे एक्सपेरिमेंट्स से चिढ़ता है। उसे ऐसी फिल्में वाकई ज्यादा पसंद नहीं आतीं, जिनमें जानबूझकर लॉजिक की ऐसी-तैसी की गई हो। आज का दर्शक फिल्म के हर फ्रेम में चाहे वह जिस तरह की भावना का हो, इसमें हाई इंटेंसिटी की तलाश करता है। कुल मिलाकर कहने का मतलब यह है कि सवाल रफ्तार का नहीं, निरंतरता का है। अगर फिल्में दर्शक को लगातार मानसिक और भावनात्मक तरीके से जोड़े रखती हैं, तो वह धीमी होकर भी प्रभावशाली हो सकती हैं, यह कोई ब्रह्म वाक्य नहीं है कि आज का दर्शक स्पीड और हाई इंगेजिंग ट्विस्ट वाली फिल्में ही देखना चाहते हैं। वे केवल एंटरटेनमेंट चाहते हैं। *

रोचक
शिखर चंद जैन

इन दिनों फ्रूट मार्केट में तरह-तरह के आम खूब मिल रहे हैं। इनका स्वाद तो लाजवाब होता ही है, इनसे जुड़े अतीत के कुछ किस्से भी बड़े दिलचस्प हैं।

आम से जुड़े ये किस्से हैं बेहद खास

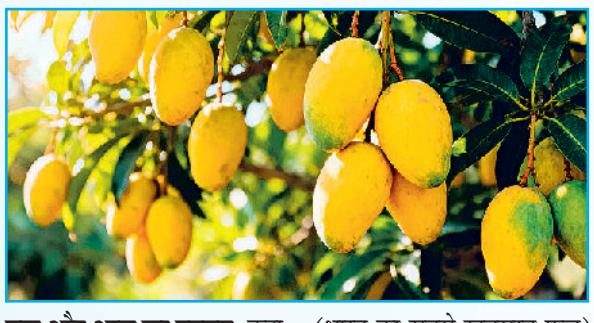

भारत में आम केवल एक फल नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य इतिहास और राजनीति का एक अहम हिस्सा रहा है। सम्राटों से लेकर राजनेताओं और साहित्यकारों तक, आम की मिठास ने कई किस्सों को जन्म दिया है। हिंदी साहित्य में 'आम' न केवल फलों का राजा होने के कारण प्रसिद्ध है, बल्कि यह वसंत ऋतु, प्रेम, मादकता और कामदेव के प्रतीकों के रूप में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता और निबंधों तक, आम का बौर, उसकी खुशबू और मिठास कवियों और लेखकों की कल्पना का अभिन्न हिस्सा रही है। आम से जुड़े कुछ रोचक किस्से हैं, जो आज भी रस ले-लेकर सुने-सुनाए जाते हैं।

आम्रपाली और आम्रपाली आम का रिश्ताः बिहार की प्रसिद्ध नृत्यांगना और वैशाली की गणिका आम्रपाली, आम के पेड़ के नीचे शिशु रूप में मिली थी, इसलिए उसका नाम 'आम्रपाली' (आम के पत्ते) रखा गया। आम की एक लोकप्रिय किस्म 'आम्रपाली' का नामकरण उसी के नाम पर किया गया है।

बुद्ध और आम का उपवनः कहा जाता है कि आम्रपाली ने भगवान बुद्ध को अपने आम के बाग (आम्रवन) में आमंत्रित किया था और उन्हें वह बाग दान कर दिया था। आम्रपाली बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गईं।

अमीर खुसरो का आम पर शेरः 13वीं सदी के महान कवि अमीर खुसरो ने फारसी में आम की प्रशंसा में कविताएं लिखी थीं। खुसरो ने आम को 'नगजा तरीन मेवाह हिंद' (भारत का सबसे खूबसूरत फल) कहा था।

अलाउद्दीन खिलजी की शाही दावत में आमः दिल्ली के सुल्तान रहे अलाउद्दीन खिलजी आम के दीवाने थे। कहा जाता है कि उन्होंने दिल्ली के 'कुश-ए-फिरोजी' में आम की कई किस्मों की एक शानदार दावत दी थी, जिसमें उन्होंने आम के साथ संगीत का शानदार कार्यक्रम आयोजित करवाया था।

आम का दीवाना बाबरः मुगल वंश के संस्थापक बाबर को आम इतना पसंद था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में आम का जिक्र किया है। कहा जाता है कि वह भारत में आम का स्वाद चखकर चकित रह गया था, क्योंकि यह फल मध्य एशिया के देशों में नहीं मिलता था।

अकबर का आम प्रेम और लाख बागः मुगल बादशाह अकबर आम का इतना शौकीन था कि उसने बिहार के दरभंगा में 1 लाख से अधिक आम के पेड़ों का बाग लगवाया था, जिसे 'लाखी बाग' कहा जाता था। उसने आम की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित करने में सहायता दी थी।

मिर्जा गालिब की आम-दीवानगीः मशहूर शायर मिर्जा गालिब आम के बड़े दीवाने थे। वे कहते थे कि 'आम में बस दो ही खूबियां होनी चाहिए-वे मीठे हों और बहुत सारे हों।' एक किस्से के अनुसार, जब उनके दोस्त ने आम को नापसंद किया, तो गालिब ने नाराज होकर कहा था, 'गधे भी आम नहीं खाते।' *

भारत में हुई आम की उत्पत्तिः माना जाता है कि आम की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में हुई, जहां 4000 वर्ष ईसा पूर्व हिंदू ग्रंथों में इस फल का उल्लेख मिलता है। बौद्ध भिक्षु भी इस फल की खेती करते थे। प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं और बाद में व्यापारियों तथा विदेशी यात्रियों के माध्यम से आम दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और अंततः दक्षिण अमेरिका तक पहुंचा।